अध्याय – 1

भारतीय धर्म, संस्कृति तथा कला के संदर्भ मे संगीत का स्थान

आज इक्कीसवी सदी में, हमारा भारत देश बहिर्गामी रूप से राजकारणी, पश्चिमात्य देशों का अनुकरण करनेवाला, ऐहिक सुखप्राप्ती के लिए विज्ञान के प्रभुत्व को स्वीकारनेवाला दिखाई देता है | परंतु इस देश का अंतरंग वेद, उपनिषद, पुराणों जैसे ग्रंथों से उपलब्ध 'भक्तियुक्त ज्ञान'(आत्मकल्याण कारक ज्ञान) से, ऋषि मुनि तथा संतों के कार्य से व्याप्त है | अर्थात आत्मज्ञानात्मक सिद्धि तथा विज्ञान के संयोग से निर्मित ज्ञान इस देश का 'मर्म' है | अतः इस 'मर्म' को विस्तार से जानने के लिए, शोधार्थी ने प्रथम आध्याय में; भारतीय धर्म, संस्कृति तथा उसके सापेक्ष कला एवं संगीत की उत्पत्ति तथा उसके स्थान के बारे में चर्चा की है |

इस सम्पूर्ण धरातल पर अत्यंत श्रेष्ठ एवं प्राचीनतम भारतीय सनातन(हिन्दू) धर्म एवं संस्कृति की गरिमा अतुलनीय है | जिस भारत भूमि पर हमने जन्म लिया है, उस भारतीय हिन्दू धर्म-संस्कृति की सोच हमेशा से विश्वात्मक अर्थात लोक कल्याणकारी एवं परोपकारी रही है | सहस्त्रावधि वर्षोंसे हमारे हिन्दू धर्म की संकल्पना "वसुधैव कुटुम्बकम्" याने सम्पूर्ण वसुंधरा एक ही एक परिवार है, इसप्रकार से है| अतः इस धर्म, संस्कृति मे जो कुछ भी देखा गया या कहा गया है वह प्रत्येक मनुष्य की सुख शांति के लक्ष्य से, विश्व कल्याण की भावना से ही है | और उसके आचरण का प्रमाण हमे भारतीय ग्रंथों से मिलता है | अर्थात हमारे 'वेदोंमे' हिन्दू धर्म का 'विचार', 'स्मृति' ग्रंथों में 'आचार', 'श्रुति' ग्रंथों मे 'उच्चार', 'रामायण-महाभारत' जैसे ग्रंथों मे 'सदाचार' तथा 'संत साहित्य' मे 'साक्षात्कार' मिलता है |[1]

[1] शंकर अभ्यंकर, दूरध्वनी से साक्षात्कार, नवंबर 11,2021

अनेक भिन्न भिन्न संस्कृतिया आयी और गई, परंतु वैदिक काल से चली आयी यह 'संस्कृति' और 'गुरु शिष्य परंपरा' आज भी जीवित है, यह हिन्दू धर्म संस्कृति की अलौकिक विशेषता एवं गौरव भी है | विख्यात इतिहासकार विलियम ड्यूरंट, जिन्होंने पूरे विश्व का इतिहास लिखा उन्होंने लिखा है कि, "इस पूरे विश्व मे जो कुछ भी पवित्र है, मंगल है, कल्याणकारी है वह सब भारत मे जनित है"| ऐसी अपूर्व धर्म संस्कृति को जानने के लिए उसे विस्तार से समझना जरूरी है |[2]

1.1 भारतीय धर्म एवं उसकी उत्पत्ति

'धर्म' की उत्पत्ति, उसका वास्तविक स्वरूप एवं विकास तथा मानव जीवन के साथ उसका संबंध; जैसे अत्यंत गहरे विषय के अनुलक्ष्य में, हमारे शास्त्र ग्रंथों के आधार पर जानकारी प्राप्त करनेकी कोशिश करे तो, सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी को 'आद्य' धर्म संस्थापक माना जाता है | तत् पश्चात मनुस्मृति के आधार पर, उनके पुत्र 'स्वायम्भूव मनु' ने भृगु, मरीचि जैसे ऋषियोंको धर्म का उपदेश दिया | ब्रह्मा जी ने ही चार वेदों का निर्माण किया और इन्ही चार वेदों को ही धर्म का मूल माना जाता है | अतः सृष्टि की उत्पत्ति के साथ धर्म की उत्पत्ति हुई ऐसा कह सकते है | अर्थात सृष्टि के समान धर्म भी अनादी है, समय के साथ केवल उसमें परिवर्तन हुआ है; धर्म के बारे में यह एक वैदिक मान्यता है |[3]

परंतु इसी के साथ साथ कालानुसार; आदिमानव से लेकर आज तक उत्क्रांत हुए मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक स्तर में आये परिवर्तन के कारण; इसी धर्म में कुछ अधिक नियम, मर्यादाएं, कुछ विज्ञान जुड़ता गया और तदनुसार धर्म की समझ एवं स्वीकृति मे भी कई बार परिवर्तन

[2] शंकर अभ्यंकर, दूरध्वनी से साक्षात्कार, नवंबर 11,2021

[3] ओझा योगेश,साक्षात्कार,जुलाई 5,2021

हुआ होगा| एक अनुसंधान के रूप मे, 'मानविकी और सामाजिक विज्ञान' के आधार पर धर्म को जानने के लिए निम्न लिखित विषयों के माध्यम से विचार किया जाता है|[4]

1. प्राचीन सिद्धांत की दृष्टि से 2. मानवशास्त्र की दृष्टि से 3. मनोवैज्ञानिक दृष्टि से 4. ऐतिहासिक दृष्टि से |

मनुष्य को जीवन जीने के लिए हमेशा आनंद एवं शांति की वांछा होती है | और इस आनंद एवं शांति प्राप्ती के लिए, हमारे ऋषि-मुनि,आचार्यों ने हमें 'धर्म' का उपहार दिया है | 'धर्म' शब्द, विश्व मे प्राचीनतम मानी गई संस्कृत भाषा का धातु 'धृ' याने 'धारण करना' से बनता है, अर्थात 'धारयति इति धर्म:' | याने हमारे सम्पूर्ण जीवनकाल पर्यंत, व्यक्तिगत रूप से और पूरा समाज जिसे धारण कर सके वही धर्म है | दूसरे शब्दों में देखे तो धर्म याने आनंदित एवं शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिए, इस सृष्टि ने बनायी हुई कुछ आवश्यक सीमाएँ या नियम अर्थात 'जीवन मूल्य' | भारतीय सनातन धर्म परंपरा के अनुसार, प्राचीन काल से ही 'धर्म' शब्द का मतलब कोई संप्रदाय से नहीं है परंतु धर्म का अपना एक विशाल अस्तित्व है जिसे संप्रदाय जैसे दूषण जुड़ गए | उदाहरण के द्वारा अगर हम इसे समझे तो, 'बहना' द्रव पदार्थ का धर्म है, 'जलना' अग्नि का धर्म है, मनुष्य सह इस पृथ्वी के सर्व 'सजीव' मृत्युधर्मिय याने 'मर्त्य' है | निष्कर्षतः हमारे भारतीय 'सनातन धर्म' का आशय मनुष्य स्वभाव, प्रकृति का नियम, सृष्टि का विधान इसी परिपेक्ष मे है तथा जिसका कोई संप्रदाय से कतई संबंध नहीं है |

भगवान श्रीकृष्ण ने भगवत् गीता के तीसरे अध्याय के पैतीसवे वे श्लोक मे, 'स्वधर्म' के बारे मे समझाते हुए कहा है कि, क्षत्रिय होने से मानव कल्याण के लिए युद्ध करना ही अर्जुन का धर्म है | यहाँ पर सात्विक एवं शांतिप्रिय बनने की अर्जुन की इच्छा उसके स्वधर्म से विपरीत है | क्योंकि हर एक मनुष्य अपने पूर्व कर्मों के कार्य-कारण भाव के सिद्धांत पर विशिष्ठ वासनाओं के साथ, विशिष्ठ

[4] प्रेमी महेंद्र कुमार(2012). *धर्म की उत्पत्ति एवं विकास.* रिसर्च जर्नल हयूमैनिटिज एण्ड सोशल साइन्स,3

परिस्थिति में जन्म लेता है और उस परिस्थिति को स्वीकार करके, स्वयं का कर्तव्य निभाना ही प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है | उदाहरण के तौर पर, अगर कोई गृहस्थ, अपने परिवार के साथ रहते हुए, पारिवारिक कर्तव्यों को छोड़कर, भगवत् प्राप्ती की वांछा से हिमालय में जाना चाहता है; अर्थात अंतिम लक्ष को पाना चाहता है, तो भी यह उसके स्वधर्म के विपरीत होगा | अथवा कोई व्यापारी अच्छा व्यापार करके बहुत धन कमा रहा हों, उसे देख के अगर कोई शिक्षक व्यापार करनेकी सोचे तो वह अपने स्वधर्म से भिन्न मार्ग पर जा रहा है या स्वधर्म का पालन नहीं कर रहा है | वह शिक्षक चाहे कितना भी धन कमा लें, भौतिक संपन्नता आएगी परंतु अंदरसे वो सुख-शांति नहीं पा सकेगा |[5]

संक्षेप में, इस सृष्टि मे जीवन जीने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सृष्टि के नियमोंका पालन करते हुए; दया, प्रेम, करुणा, सद्भावना जैसे नैसर्गिक जीवन मूल्यों को अपने व्यवहार में समाविष्ट कर, स्वयं के साथ साथ मानव कल्याण के उद्देश्य से जीना ही **'मानव धर्म'** है |

1.1.1 धर्म की परिभाषा

हमारे भारतीय ग्रंथ तथा रुढ़ि–परंपराओं के आधार पर; कई आचार्य, पंडित एवं अधिकारी पुरुषों ने 'धर्म' के विषय मे अपने अपने मत व्यक्त करके उसे परिभाषित किया है| भारतीय धाराओं पर आधारित तथा विद्वानों द्वारा दी गई कुछ परिभाषाएं निम्न लिखित है|

मनुस्मृति के एक श्लोक के अनुसार "वेदोSखिलो धर्ममूलम् |"[6] अर्थात वेद ही धर्म का मूल है अथवा वेदों से ही मानव धर्म उत्पन्न हुआ है|

महाभारत के वनपर्व में, वेदों के संकलक स्वयं वेदव्यासजी ने लिखा है कि,

---

[5] चिन्मय मिशन. चिन्मय चैनल. स्वधर्म(चैप्टर 3, श्लोक 35)
https://www.youtube.com/watch?v=TWj2KVAx4GY&t=251s
[6] मनुस्मृति(1970). (द्वितीय संस्करण)वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन. पृष्ठ 37

"धर्मस्य तत्त्वम निहितं गुहायाम्|"[7] अर्थात धर्म का तत्त्व हृदय के अंदर रहता है याने अत्यंत गूढ है|

मनुस्मृति के ही अनुसार " धृति: क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रियनिग्रह: |

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ||" [8] अर्थात धैर्य, क्षमा, हमेशा संयम में रहाना, चोरी न करना, शौच, इन्द्रिय निग्रह, ज्ञान, विद्या, सत्य तथा अक्रोध यह धर्म के दस लक्षण है |

मनुस्मृति के प्रथम अध्याय के 108 श्लोकानुसार, "आचार: परमों धर्म|"[9] अर्थात सदाचार परम धर्म है |

महर्षि कणाद, जिन्होंने वैशेषिक दर्शन का निर्माण किया, उनके अनुसार

"यतो भ्युदयानि:श्रेय स सिद्धि:स धर्म:|" [10] अर्थात जिसके द्वारा भौतिक समृद्धता तथा अंतिम पुरुषार्थ-मोक्ष की प्राप्ती हो याने भोग और मोक्ष दोनों की प्राप्ती होती है उसे धर्म कहते है |

महाभारत के अनुसार धर्म की अलग अलग परिभाषाए दी गई है, उनमेसे कुछ... "स्वकर्मनिरतों यस्तु धर्म: स इति निश्चय:|" अर्थात अपना कर्म करते रहना और उसे उत्तम प्रकार से निभाना ही धर्म है | "नासौ धर्मों यत्र न सत्यमस्ति |" अर्थात जहाँ सत्य नहीं वह धर्म नहीं | "धारणाद धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजा:|" अर्थात प्रजा को या समाज को धारण करनेवाला या एकसूत्र मे बंधनेवाला ही धर्म कहा जाता है | "य: स्यात् प्रभवसयुक्त: स धर्म इति निश्चय: |" अर्थात जिसमे सदैव कल्याण करनेका सामर्थ्य है वही धर्म है |[11]

---

[7]महाजनों येन गतः स पन्थाः, http://jeevan-sutra.blogspot.com/2008/07/path-traversed-by-great-souls-is-path.html

[8] मनुस्मृति(1970). (द्वितीय संस्करण)वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन. पृष्ठ 36

[9] Arya Samaj – मनुस्मृति के अनुसार धर्म-अधर्म की परिभाषा – डॉ विवेक आर्य https://www.facebook.com/arya.samaj/posts/1510057205683740/

[10] अभ्यंकर शंकर, दूरध्वनी से साक्षात्कार, नवंबर 11, 2021

[11] धर्म की परिभाषा(महाभारत के संदर्भ में)-कृष्णकोश. https://hi.krishnakosh.org/%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%A3/%E0%A4%A7%E0

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के धर्म के बारे में विचारों के अनुसार, "धर्म व्यवहार है सिर्फ विश्वास नहीं | धर्म डर पर विजय है और असफलता तथा मौत का मारक है | धर्म बिना का इंसान लगाम के बिना घोड़े की तरह है |" [12]

निष्कर्षतः, 'धर्म' याने मन एवं आत्मा का मार्गदर्शन करनेवाली एक नैतिक धारणा, जो मनुष्य को आत्मोंन्नति के पथ पर ढाल दे | अत: धर्म याने, "अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुचने हेतु उत्तम आचार, विचार, व्यवहार से तथा दया, करुणा जैसे मानवता वादी दृष्टिकोण से विवेकपूर्ण जीवन जीना; जिसमे सिर्फ मानव कल्याण की ही भावना हो| इसी को भारतीय सनातन धर्म अर्थात 'मनुष्य धर्म' कहते है | मनुष्य जीवन विचार एवं संस्कारों की यह धरोहर आदिकाल से आजतक अत्यंत सहजता से हस्तांतरित होती आयी है, परंतु इसी हस्तांतरण दरमियान इन सभी स्वाभाविक कृतियों का 'भाव' नष्ट होकर; वर्तमान काल में 'धर्म' याने देवता या सांप्रदायिक वाद, पूजा–पाठ, यज्ञ–याग जैसे कर्मकांडों का केवल आडम्बर; तथा पशुबलि–नरबली जैसी विकृतियाँ शेष रहे गई है | परंतु कोई भी सांप्रदायिक धर्म पालन से पहले 'मानव धर्म' का बोध होना अत्यंत जरूरी है | क्योंकि विश्व कल्याण करते करते मुक्त होना यही सच्चा 'मानव धर्म' है |

संक्षेप मे, शास्त्र मे बताया गया **'आदर्श धर्म' वो है; जिसमें वाणी का कर्म, शरीर का कर्म, एकाग्रता की प्राप्ती का अभ्यास, जागरूकता का अभ्यास, शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य, मनन-चिंतन तथा जीवन जीने का सकारात्मक दृष्टिकोण इत्यादि आंतर्भूत है और इसी को 'शुद्ध धर्म' मान सकते है** |[13] परंतु धर्म की चर्चा करना, धर्म के बारे में केवल चिंतन करना या धर्म का ज्ञान लेना पर्याप्त नहीं

%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AE_%E0%A4%95%E0%A5%80_%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B7%E0%A4%BE_(%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4_%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AD)

[12] डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के प्रेरणादायी विचार, कोट 33,45,3 (2015). https://www.nayichetana.com/2015/12/dr-s-radhakrishnan-quotes-in-hindi.html

[13] शंकर अभ्यंकर, दूरध्वनी से साक्षात्कार, नवंबर 11,2021

है अपितु आत्म कल्याण एवं पर कल्याण हेतु आदर्श धर्म को धारण करना अर्थात **धर्म का आचरण** करना अत्यंत आवश्यक है |

1.2 संस्कृति

जिस प्रकार से धर्म एक प्राचीन एवं मानव सभ्यता से जुड़ी हुई अमूर्त नैतिक धारणा है; उसी प्रकार से संस्कृति भी धर्म से जुड़ी हुई धारणा है |

मानव सृष्टि के प्रारंभ से ही जीवन जीने की आकांक्षा के साथ साथ, आनंद एवं सुख की खोज करना मनुष्य की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है| मनुष्येतर प्राणी प्रकृति के साथ संपूर्णतः ताल – मेल से अर्थात प्रकृति जैसे रखती है वैसे ही जीवन व्यतीत करते है | परंतु मनुष्य मे रहे 'मन' एवं 'बुद्धि ' के कारण वह जीवन के प्रति सदैव असन्तुष्ट रहेता है और जीवन को अधिक अधिक सुन्दर और सुखी बनानेका निरंतर प्रयास करता है | मनुष्य केवल शरीर से याने सिर्फ भोजन ग्रहण करके नहीं जीता, परंतु उसके 'मन एवं आत्मा' की भूख उसे अधिकाधिक सुख प्राप्ती के लिए सदैव विवश करती रहेती है| अतः, मनुष्य की इस आत्मसंतुष्टी एवं जिज्ञासापूर्ती की स्वाभाविक कामना से ही 'धर्म', 'दर्शन शास्त्र' की निर्मिती हुई होगी तथा मनुष्य की 'सौन्दर्य की खोज' की उपलब्धि मे साहित्य; संगीत, मूर्ति, चित्र, वास्तु जैसी ललित कलाएं तथा खेल कूद इत्यादि का निर्माण हुआ होगा, यह विचार तर्क शुद्ध प्रतीत होता है | इसी को मनुष्य की उत्क्रान्ति या विकास कहा जा सकता है और यही संस्कृति को इंगित करता है | अतः 'संस्कृति' याने अपने पुरखों से प्राप्त की गई वह धरोहर जिसे व्यक्तिगत पात्रतानुसार स्वयं के अभ्युदय के लिए ढालकर आनेवाली पीढ़ी को सोंप देना |

अर्थात 'संस्कृति' याने कोई भी देश प्रदेश से परे मानव जगत के साथ उसके हित के सारे आदर्श, मूल्य, परम्पराएँ आदि की संवाहिका, जिसके द्वारा मनुष्य जीवन की यात्रा सफल होती है |

1.2.1 संस्कृति की परिभाषा

‘संस्कृति’ शब्द मूल संस्कृत शब्द है, जिसकी संधि सम् + कृति = संस्कृति होती है | संस्कृति याने सृजन या परिष्करण या परिमार्जन है | हमारे ऋग्वेद के अनुसार “सा संस्कृति: प्रथमा विश्ववारा |”[14] अर्थात आदि संस्कृति विश्व के कल्याण के लिए ही थी |

भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों ही विद्वानोने ‘संस्कृति’ को परिभाषित किया है, जिनमें से कुछ परिभाषाएं निम्नलिखित है |

महर्षि ऐतरिय जी के अनुसार, “मानव जीवन के जिस किसी क्षेत्र में संस्कार साधन के उदेश्य से जो कोई कर्म किया जाता है उसे ही संस्कृति का कर्म कहा जा सकता है|”[15]

विद्वान भगवत शरण उपाध्याय के विचार से “संस्कृति समय है, अनवरत और सार्वभौम है, क्षैतिज और ऊर्ध्वसर है | दिक् काल मे कोई ऐसा बिन्दु नहीं जहाँ मनुष्य खडा होकर कह सके, इसके आगे ऐसा कुछ भी नहीं जो मुझे प्रभावित कर सके|”[16]

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार, “सभ्यता का कठोर हो जाना ही संस्कृति है|”[17]

पं जवाहरलाल के विचारों मे, “संस्कृति क्या है? शब्दकोश उलटने पर इसकी अनेक परिभाषाएँ मिलती है| एक बड़े लेखक का कहना है कि संसार मे जो भी सर्वोत्तम बातें जानी या कही गई है उनसे स्वयं को परिचित कराना संस्कृति है | एक अन्य परिभाषा में कहा गया है कि संस्कृति शारीरिक या मानसिक शक्तियोंका प्रशिक्षण, दृढ़ीकरण या विकास अथवा उससे उत्पन्न अवस्था है| यह मन,

---

[14] ओझा योगेश,साक्षात्कार,जुलाई 5, 2021

[15]मित्तल अंजलि(2003).*भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत*.नई दिल्ली:कनिष्क पब्लिशर्स,डिस्ट्रीब्यूटस. पृष्ठ 35

[16]मित्तल अंजलि(2003).*भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत*.नई दिल्ली:कनिष्क पब्लिशर्स,डिस्ट्रीब्यूटस. पृष्ठ 35

[17] संस्कृति का शाब्दिक अर्थ| *संस्कृति की परिभाषा*| https://e-gyan-vigyan.com/sanskrti-ka-shaabdik-arth/

आचार अथवा रुचि की परिष्कृति अथवा शुद्धि है| यह सभ्यता का भीतर से प्रकाशित हों उठना है | इन सभी अर्थों मे संस्कृति किसी ऐसी चीज का नाम हो जो बुनियादी और अन्तराष्ट्रिय है|”[18]

ई. बी. टायलर, 1871 में प्रकाशित अपनी पुस्तक ‘Primitive Culture’ के अनुसार, “संस्कृति वह जटिल संपूर्णता है, जिसमे ज्ञान, विश्वास, कला आचार, कानून प्रथा तथा इसी प्रकार की ऐसी सभी क्षमताओं और आदतों का समावेश रहता है, जिन्हे मनुष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है|”[19]

मैथ्यू आर्नल्ड के अनुसार, “विश्व के सर्वोत्कृष्ट कथनों और विचारों का ज्ञान भंडार ही संस्कृति है |”[20]

तत्वज्ञान एवं विद्वानोके मतानुसार हमने धर्म एवं संस्कृति को समजनेका प्रयास किया परंतु शोधार्थी के विचार से, जब से मनुष्य जीवन की शुरुआत हुई है, मनुष्य जाने अनजाने ही धर्म एवं संस्कृति के आश्रय मे पलने लगा है | जहाँ पर भी मनुष्य जन्म लेता है; उस प्रदेश, समाज, कुल-परिवार की धारणाओं के अनुसार, अर्भक के ऊपर संस्कारों की शुरुआत होती है | इन्ही धारणाओं के आधार पर भाषा, खान-पान, आचरण, वाणी, वर्तन, पूजा-पाठ एवं धर्म से जुड़े रस्म-रिवाज आदि से अर्भक को ज्ञात कराना प्रारंभ हो जाता है | इसी दायरे मे रहेकर, अर्भक से बालक और बालक से आगे मनुष्य की सारी श्रेणियों में; संयमीत, संतुलित एवं प्रसन्न रहकर खुद को परिपक्व बनाने की शिक्षा को अर्थात ‘धर्म एव संस्कृति’ की शिक्षा को मनुष्य जाने अनजाने ही ग्रहण कर लेता है|

---

[18] संस्कृति का शाब्दिक अर्थ| *संस्कृति की परिभाषा*| https://e-gyan-vigyan.com/sanskrti-ka-shaabdik-arth/

[19] संस्कृति का अर्थ एवं परिभाषा | स्वसंस्कृति ग्रहण एवं परसंस्कृति ग्रहण https://www.samareducation.com/2021/05/culture-and-education-enculturation-acculturation.html

[20] संस्कृति का स्वरूप और लक्ष्य, अखंडज्योति जनवरी1965 http://literature.awgp.org/akhandjyoti/1965/January/v2.7

संक्षेप में, "धर्म एवं संस्कृति" मानव सभ्यता के साथ जुड़ी हुई 'अमूर्त' किन्तु 'अविछेद्य' नैतिक धारणाएँ है |

1.3 कला

धर्म तथा संस्कृति संबंधी उपरोक्त चर्चा से हमे ज्ञात हुआ कि, धर्म और संस्कृति मनुष्य जीवन की अमूल्य 'निधि' है| इस निधि के बल पर ही मानव अपना अंतिम उद्देश्य प्राप्त कर सकता है | परंतु प्रत्येक मनुष्य; अपनी मन, बुद्धि तथा चेतना के स्तर पर एक दूसरे सें भिन्न है | और इसी कारण से, मनुष्य समाज में रहते हुए भी अपनी स्वतंत्र परिकल्पनाओं को व्यक्त करता है तथा स्वतंत्र अनुभूति को महसूस भी करता है; अर्थतः मनुष्य 'सृजन शील' है| इसी सृजन से मनुष्य अमूर्त या निराकार को साकार स्वरूप प्रदान करनेकी कोशिश करता है| अतः **शोधार्थी के मतानुसार, मनुष्य की अनुभूतियों की तथा परिकल्पनाओं की अभिव्यक्ति या सर्जन ही "कला" है** | यही अभिव्यक्ति को हम आत्मानुभूति भी कह सकते है जो सत्य, चेतन एवं अमर है| दूसरे शब्दों मे 'कला' एक ऐसी अनुभूति है, जिसमे स्वाभाविक रूप से 'सौन्दर्य का बोध' होता है एवं 'आत्मानंद' की प्राप्ती होती है|

'तालयोगी' पं. सुरेश तलवलकर जी कला के संदर्भ मे कहते है कि, "बाहर से अंदर जानेवाली माहिती को विद्या कहेते है| गुरु द्वारा प्राप्त की गई उसी विद्या का चिंतन मनन करके प्रस्तुतीकरण करना 'कला' है| यही 'कला' मनुष्य के व्यक्तित्व को भिन्नत्व प्रदान करती है|"[21]

1.3.1 कला की व्यापकता

हमारे प्राचीन ग्रंथों से देवी देवताओं की सभा के वर्णन मिलते है; जिसमे मेंनका, रंभा, उर्वशी, जैसी अप्सराओं की नृत्य कला; गन्धर्वों का गान एवं सरस्वती जी की वीणा, महादेव का डमरू, श्रीकृष्ण

[21] भदे शीतल, साक्षात्कार, नवंबर 11, 2021

की बाँसुरी, नारद जी का तुंबरू इत्यादि वाद्यों का उल्लेख मिलता है| अर्थात संगीत, नृत्य, आदि की सहायता से आत्म रंजन एवं सौन्दर्य की अनुभूति का प्रमाण हमारे शास्त्रों से मिलता है|

सिंधु संस्कृति या मोहनजोदड़ों के अवशेषों में भी वाद्य तथा कई शिल्पों का समावेश है| अजंता इलोरा तथा खजुराहो जैसी गुफाओं मे नृत्य की विविध मुद्राओं के प्रमाण मिलते है| 'कामसूत्र', 'शुक्रनीति', 'कला विलास', 'ललित विस्तार' इत्यादि सभी ग्रंथों मे कला का वर्णन मिलता है | अधिकतर ग्रंथों मे 64 कलाएँ मानी गई है | प्रबंध कोश मे 72 कलाओं की तथा ललित विस्तार में 86 कलाओं की सूची मिलती है|[22]

वर्तमान काल मे कलाओं को दो विभाग मे वर्गीकृत किया गया है |

1. उपयोगी कलाएँ – जिनके अंतर्गत वस्त्र निर्माण, आभूषण निर्माण, भोजन निर्माण इ. जैसी जीवन निर्वाह के साधन हेतू कलाओं की सूची मिलती है |
2. ललित कलाएँ – आनंद प्रदान करनेवाली तथा सौन्दर्य बोध करनेवाली कलाएँ इस श्रेणी के अंतर्गत आती है | जैसे मूर्ती कला, चित्र कला, संगीत, वास्तुकला, काव्य आदि|[23]

1.3.2 कला की परिभाषा

मूलतः संस्कृत भाषा के इस 'कला' शब्द की उत्पत्ति 'कल्' धातु से मानी गई है| 'कल्' याने सुन्दर, सुखद, मधुर, कोमल इत्यादि | अर्थात कला याने 'सुंदरता' या आनंददायी वस्तू | संस्कृत शब्द कोश मे 'कला' शब्द अनेक अर्थ मे उल्लिखित है| साहित्य संबंधित विवेचनो मे 'कला' शब्द का

[22] अशोक कुमार 'यमन'(2015). संगीत रत्नावली. चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 260-61

[23] अमर विश्व. अगस्त 31,2020. कला के प्रकार कितने है ? फाइन आर्ट्स कीसे कहते है ? https://saptswargyan.in/kala-ke-prakar/

प्रयोग भिन्न भिन्न बीस अर्थों में हुआ है | शास्त्र मे काल गणना के लिए भी 'कला' शब्द का प्रयोग होता है | जैसे

30 काष्ठा = 1 कला
30 कला = 1 क्षण
12 क्षण = 1 मुहूर्त[24]

शिल्प के लिए भी 'कला' शब्द प्रयोग का उल्लेख मिलता है | कला शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 'ऋग्वेद' मे मिलता है|

" यथा कलां यथा शफं ऋणं संयमसि |"[25]

इसके अतिरिक्त कला शब्द का प्रयोग यजुर्वेद, अथर्ववेद, षडविशम् ब्राह्मण, शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरिय आरण्यक जैसे वैदिक ग्रंथों मे मुख्य रूप मे मिलता है |

भरत मुनि के नाट्य शास्त्र मे 'कला' शब्द का प्रयोग 'ललित कला' के संदर्भ मे सर्वप्रथम मिलता है | भरत मुनि के अनुसार ऐसा कोई ज्ञान नहीं, शिल्प नहीं या विद्या नहीं जो कला ना हो |

' न तज़्ज्ञानं न तच्छिल्पं न स विद्या न स कला |'[26]

महात्मा गाँधीजी के अनुसार आत्मा का ईश्वरीय संगीत ही कला है|[27]

---

[24] पुरोहित कानुभाई, साक्षात्कार, दिसंबर18,2020

[25]ऋग्वेद सूक्त 8.47 , Hindusiampedia
https://hinduismpedia.kailaasa.org/wiki/%E0%A4%8B%E0%A4%97%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A5%87%E0%A4%A6%E0%A4%83_%E0%A4%B8%E0%A5%82%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%82_%E0%A5%AE.%E0%A5%AA%E0%A5%AD

[26] शुक्ल बाबूलाल(वि. स.2065). *श्रीभरतमुनिप्रणीत हिन्दी नाट्यशास्त्र.* वाराणसी : चौखम्बा प्रकाशन. पृष्ठ 23

[27] कला का अर्थ, परिभाषाएं, विशेषता.
https://www.kailasheducation.com/2021/10/Kalaa-arth-paribhasha-visheshta.html#:~:text

राजा भर्तृहरि अपने नीति-शतकम् के बारहवे श्लोक मे लिखते है कि साहित्य, संगीत, कला विहीन मनुष्य नाखून और सींघ रहित पशु के समान है |

'साहित्यसङ्गीतकलविहीन: साक्षात्पशु: पुच्छविषाणहीन: |'[28]

महर्षि शुक्राचार्य अपने ग्रंथ 'नीतिसार' मे कला का लक्षण बताते है कि, "एक गूंगा व्यक्ति जो वर्णोच्चार नहीं कर सकता परंतु अभिव्यक्त हो सकता है वही कला है|"[29]

उपरोक्त शास्त्रीय विवेचन से 'कला' की महती एवं गहेराई सिद्ध होती है|

1.3.3 'मृच्छकटिक' में कला की महत्ता

प्राचीन साहित्य के 'मृच्छकटिक' नाटक में कला की महत्ता सिद्ध करने वाला प्रसंग उल्लेखित है, जो इसप्रकार है –

इस नाटक के कथानक के अनुसार, उज्जैन नगरी मे चारुदत्त नामक एक सद्गुणी ब्राह्मण निवास करता है| वह अपनी दानशीलता तथा अति उदारता के कारण निर्धनता की स्थिति मे पहुँच जाता है| उसकी सत्य वादिता एवं मृदु व्यवहार पर 'वसंतसेना' नामक एक गणिका उसके प्रति आकर्षित होती है | एकबार 'शार्वीलिक' नामक चोर चारुदत्त के यहा चोरी करने आता है | शार्विलिक चारुदत्त की निर्धनता से परिचित होता है | परंतु वसंतसेना के आगमन से ज्ञात होनेसे उसके अलंकारों की प्राप्ती हेतु चोरी करनेकी कामना रखता है| शार्विलिक 'कला' का पुजारी होता है अतः स्वर्णलंकार चुराने

[28] " मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति...."- मनुष्य एवं पशुओं में अन्तर पर https://vichaarsankalan.wordpress.com/2018/11/18/%E0%A4%AE%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%B0%E0%A5%82%E0%A4%AA%E0%A5%87%E0%A4%A3-%E0%A4%AE%E0%A5%83%E0%A4%97%E0%A4%BE%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%9A%E0%A4%B0%E0%A4%A8%E0%A5%8D/

[29] चौंसठ कलाएँ – भारतकोश ज्ञान का हिन्दमहासागर https://bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%9A%E0%A5%8C%E0%A4%82%E0%A4%B8%E0%A4%A0_%E0%A4%95%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%8F%E0%A4%81#gsc.tab=0

हेतु, वस्त्र चुराने हेतु या धन-धान्य चुराने हेतु दीवार मे किस तरह से 'सेंध' करना उचित है यह उसे ज्ञात होता है | अतः वह अंत मे सोचता है कि, शायद इस घर से मुझे कुछ भी न मिले पर दूसरे दिन प्रातःकाल जब रात को हुई 'सेंध' का समाचार मिलेगा तब चोर के 'कला' की प्रशंसा जरूर होगी ईसी प्रकार से सेंध करके चोरी करूँगा |[30]

1.3.4 मानव जीवन में कला की आवश्यकता तथा उसका स्थान

'कला' का स्थान समाज में एक सार्वभौम भाषा के रूप में है, क्योंकि कला मनुष्य के अनुभव, भावों एवं विचारों को व्यक्त करनेका एक प्रभावी माध्यम है| और इसी अभिव्यक्ति को और सुन्दरतम् करनेका मनुष्य निरंतर प्रयास करता है| मानवी जीवन सुख-दुःख का संमिश्रण होते हुए भी, प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन काल दरमियान हमेशा सुख एवं खुशी की तलाश करता रहेता है| जैसे, अपने आप को 'सजाना'-'सवाँरना' भी सुख एवं आनंद की अनुभूति देता है| अर्थात सुन्दर स्त्री या पुरुष को भी अधिक सुन्दर बननेकी अभिलाषा होती है| याने अधिकाधिक सौन्दर्य का ध्यास होना अथवा हमारे भावों की अभिव्यक्ति को परम सुन्दर बनाना, 'कला की आत्मा' है | दूसरे शब्दोंमे, मानवी मन की अनेक पृथक अवस्थाओं का परिणाम किसी माध्यम के द्वारा जब कौशल से एवं सौन्दर्य पूर्ण व्यक्त होता है तब 'कला' का सृजन होता है अर्थात अमूर्त की मूर्त स्वरूप मे अभिव्यक्ति होती है और यही अभिव्यक्ति अलौकिक आनंद प्रदान करती है| 'औचित्यविचारचर्चा' तथा 'कविकण्ठाभरण' ग्रंथ के रचयिता क्षेमेंद्र जी कला के बारेमें कहते है कि, " कलाकार ने स्वयं के आत्मसवरूप का किया हुआ आविष्कार 'कला' कहलाता है |"[31]

[30] पुरोहित कानुभाई, साक्षात्कार, दिसंबर18,2020

[31] आमोणकर किशोरी (2017). स्वरार्थरमणी रागरससिद्धांत(चतुर्थ आवृत्ती)। पुणे : राजहंस प्रकाशन, पृष्ठ 1

अतः मानव जीवन मे, आत्मानंद की अनुभूति के लिए 'कला' का स्थान महत्व पूर्ण होकर मानव सभ्यता के विकास में भी 'कला' का विशेष रूप से योगदान रहा है |

1.4 संगीत

प्रकृति ने मनुष्य को जन्म दिया और मनुष्य ने कला को ! अर्थात मनुष्य ने संगीत को जन्म दिया यह मानना अनुचित नहीं होगा | वैसे तो संगीत की उत्पत्ति के बारे मे प्राग ऐतिहासिक काल से लेकर प्रत्येक काल के संदर्भ में कई तथ्य एवं वार्ताएँ उपलब्ध है| संगीत का जन्म सर्वप्रथम यज्ञादी के अवसर पर 'गेय मंत्र' के रूप मे हुआ | प्राचीन काल से संगीत का संबंध पूर्णतः धर्म तथा अध्यात्म से जुड़ा हुआ था, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण 'साम-गान' प्रदान करता है| कालांतर से संगीत सामाजिक जन जीवन मे प्रविष्ट हुआ और मानव समाज के हर वर्ग ने उसे सहजतासे अपनाया और यही संगीत मानव संस्कृति का एक अविभाज्य अंग बन गया| तत् पश्चात् संगीत को सुव्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए नियमों एवं सिद्धांतों के माध्यम से शास्त्र के रूप में संगीत का निर्माण हुआ | इस प्रकार से हम संगीत के शास्त्रीय या सैद्धांतिक पक्ष को समज सकते है| परंतु संगीत को जानने के लिए हम प्रकृति से ही शुरुआत करे तो; प्रकृति में हमे बादल का गरजना, बिजली का कड़कना, वर्षा की छम-छम, अग्नि की भड़-भड़, पेड़ों की सर-सर, झरनों की झर-झर, नदियों की कल-कल, पक्षियों की फड़-फड़ तथा मीठी चटचहाहट, तूफ़ानी आवाज की सिटी एवं विविध पशुओं की विशिष्ट ध्वनियाँ आदि नाद सुनाई देते है| इसी प्रकृति से उत्पन्न हुए मानव शरीर को भी गौर से देखे तो; मानव के श्वास प्रश्वास की सोहम् ध्वनि, हृदय की धड़कन, फेफड़ों की घुरघुराहट, पाचन क्रियाओं की टिक-टिक इत्यादि ध्वनियाँ निरंतर सुनाई देती है | इस प्रकार से प्रकृति एवं पुरुष के संयोग से निर्मित, उपरोक्त सभी

ध्वनियाँ पृथक होते हुए भी अत्यंत लयबद्ध अथवा क्रमबद्ध होती है| इसी स्वयं संचलित सृष्टि क्रम को हम "ब्रह्म संगीत" कहे सकते है जो ॐ रूपी नादब्रह्म से उत्पन्न है |[32]

अर्थात किसिका ध्यान आकृष्ट हो या न हो परंतु पूरी सृष्टि संगीतमय है| अतः जो सृष्टि की उत्पत्ति का इतिहास है वही संगीत की उत्पत्ति का इतिहास है| मानव ने संगीत के इतिहास को शब्दों मे सीमित किया है, जो चिंतन एवं तत्वज्ञान के आधार पर बिल्कुल सही भी है | परंतु **शोधार्थी मानता है कि, सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही संगीत की उत्पत्ति हुई है; अर्थात सृष्टि और संगीत दोनों एकसाथ ही जन्मे है |** यह सृष्टि जिस प्रकार से अनंत है वैसे ही संगीत भी अनंत है | **शोधार्थी संगीत का संबंध "ऊर्जा" याने "ENERGY" के साथ जोड़ना चाहता है | ऊर्जा संरक्षण के नियमानुसार**

"Energy is neither created nor destroyed but only gets transformed from one form to another."[33]

अर्थात (प्रणाली मे ऊर्जा है ऐसा मानते हुए)ऊर्जा को निर्माण करना संभव नहीं तथा उसका विनाश करना भी शक्य नहीं, ऊर्जा का केवल रूप बदला जा सकता है | उसी प्रकार से सृष्टि की उत्पत्ति मे ही संगीत समाया हुआ है, और प्राग ऐतिहासिक काल से लेकर आज के वर्तमान युग तक, केवल और केवल संगीत का "स्वरूप" बदला है |

1.5 भारतीय धर्म, संस्कृति और संगीत का अंतःसंबंध

"भारतीय संगीत" को अनेकविध पहलुओं से देखकर उसकी समिक्षा करनेवाले विद्वान संगीतज्ञ एवं एथनोंम्यूजिकोलॉजिस्ट (लोकसंगीत तथा आदिम संगीत के अभ्यासक) श्री अशोक रानाडे जी ने संगीत को मुख्यतः पाँच विभाग में पृथ्थकृत किया है | जैसे 1. आदिम संगीत   2. लोक संगीत

[32] शर्मा श्रीराम आचार्य(2007). *शब्द ब्रह्म- नाद ब्रह्म.* मथुरा: युगनिर्माण योजना गायत्री तपोभूमि, मथुरा पृष्ठ 54, 62-63

[33] ऊर्जा संरक्षण - इन हिन्दी https://www.examshindi.com/law-of-conservation-of-energy/

3. धर्म संगीत 4. कला संगीत 5. जन संगीत |[34] इन्ही विभागों में सर्व प्रकार का संगीत समाया हुआ है | इस धरातल पर 'धर्म, 'संस्कृति' एवं 'संगीत' की व्याप्ति अत्यंत विशाल है | पूरे विश्व मे कई प्रकार के धर्म तथा संबंधित संस्कृतियाँ अस्तित्व मे थी परंतु हमारी गरिमामयी भारतीय – सनातन(हिन्दू) धर्म एवं संस्कृति जिसका मूल आधार "वेद" माना गया है, उसकी महानता हमेशा से चरमबिन्दु पर रही है | हमारे ऋग्वेद के अनुसार "सा संस्कृतिः प्रथमा विश्ववारा |" अर्थात आदि संस्कृति विश्वकल्याण के लिए थी | कोई भी धर्म का मूल उद्देश्य हमेशा से मानव कल्याण ही है | हमारी भारतीय विचार धारा के अनुसार 'धर्म' का लक्ष्य; मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करके, आत्मोंन्नति का मार्ग दिखाकर उसकी ऐहिक एवं आध्यात्मिक उन्नति करना है| इसिके साथ धर्म एक सामाजिक 'धारणा या विचार' है और 'भाव' तथा 'आस्था' भारतीय समाज की नीव है | अतः हमारे सनातन धर्म में व्रतों एवं उत्सवों का प्राधान्य रहा है तथा इन व्रतों तथा उत्सवों में रही धार्मिक भावनाओं के साथ संगीत जुड़ा हुआ है | अर्थात, हमारे सनातन धर्म में व्रतों एवं उत्सवों का प्राधान्य रहा है वहाँ के व्रत-उत्सव, परम्पराएं, रीतियाँ आदि होकर 'लोकसंगीत' इस की 'प्राण' समान है | क्योंकि हमारे सारे भारतीय उत्सव, त्योहार तथा शुभ प्रसंगों में अनुरूप 'गीतों का गान' परंपराओं से चला आ रहा है, जिसमें सब साथ मिलके भावों की अभिव्यक्ति करके और सुख एवं आनंद की प्राप्ती करते है | हमारी भारतीय परंपरा में उल्लेखित 'सोलह संस्कारों' में (अर्थात जन्म से मृत्यु तक) 'संगीत' का प्रभाव रहा है| हमारे रोज-बरोज के जीवन मे, प्रातःकाल मंदिरों मे भगवान को जगाने के लिए मंगल वाद्य वादन; आरती में ढोल, नगाड़ा, शंख नाद, घंटा नाद इत्यादि; शुभ प्रसंगोमे शाहेनाई वादन; त्योहार एवं उत्सवोंमे भी कजरी, चैती, झूला जैसे गीत प्रकार परंपरा से प्रचलित है| विभिन्न ऋतुओं पर आधारित गीत प्रकार भी लोकप्रिय है| इतना ही नहीं बल्कि समाज में दु:ख व्यक्त करने के लिए भी 'संगीत' का सहारा लिया जाता है | हमारे कुछ संतों ने लोकोपदेश हेतु, छोटे छोटे गेय दोहें,

[34] रानडे अशोक(2009). *संगीत विचार*(प्रथम आवृत्ती). मुंबई : पोपुलर प्रकाशन, पृष्ठ 29-30

चौपाई आदि लिखकर जीवन जीने की कला को अर्थात जटिल तत्वज्ञान को सरलता से समझाया है| इस प्रकार से भारतीय धर्म एवं संस्कृति मे 'संगीत' समाया हुआ है |

अर्थात, भारतीय धर्म और संस्कृति को "संगीत" के द्वारा गूँथा गया है | अतः जब तक "भारत" देश का अस्तित्व बना रहेगा तब तक; भारतीय धर्म, संस्कृति और संगीत चिरस्थायी रहेंगे |

1.6 भारतीय संगीत का विकास

संगीत की उत्पत्ति के विषय में अनेक धार्मिक, पौराणिक कहानियाँ एवं मान्यताएँ सर्व ज्ञात है | भारतीय संगीत तथा उसके विकास को हम व्यापक तौर पर तीन मुख्य कालखंडों मे विभाजित कर सकते है|

1. **प्राचीन काल:** इसमे वैदिक काल, अति प्राचीन काल 2000 ईसा पूर्व से 1000 ई. तक का समय गिना जाता है |
2. **मध्यकाल:** इसमे 1000 ई. के बाद 1800 ई. तक का समय गिना जाता है | इस काल के अंतिम तीनसौ से कुछ अधिक वर्ष मुग़ल, तुर्क तथा अन्य इस्लामिक शासन को प्रकट करते है |
3. **आधुनिक काल:** इसमे 1800 ई. के बाद के समय का संगीत एवं उससे जुड़ी कलाओंका युग गिना जाता है |[35]

[35] सेन अरुणकुमार(2005). *भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन.* भोपाल : मध्यप्रदेश, पृष्ठ 3

1.6.1 श्रुति, स्मृति तथा पुराणों में संगीत

इतिहास के तौर पर हम देखते है तो, सिंधु संस्कृति के अवशेषों में हमे सात छिद्रों वाली बाँसुरी,मृदंग, वीणा, करताल जैसे वाद्य मिलते है | हमारे सबसे पुराने ग्रंथ 'ऋग्वेद' में तान का तथा नाड़ी, गरगर, वीणा का उल्लेख पाया जाता है तथा 'ऋग्वेद' का ही आँठवा मण्डल – 'प्रगाथा' गीतों से युक्त है| 'सामवेद' को मुख्यत: संगीत का उत्पत्ति ग्रंथ माना जाता है, जिसके मंत्र विशिष्ट प्रकार के गेय छंदों में गाएँ जाते है | सामवेद में ही उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित जैसे तीन स्वर तथा प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मंद्र, क्रुष्ट, अतिस्वार्य जैसे सप्त स्वरों का उल्लेख मिलता है | ब्राह्मण ग्रंथ, अरण्यक ग्रंथ, उपनिषदों मे तथा याज्ञवल्क्य शिक्षा, पाणिनीय शिक्षा , मंडुकी शिक्षा जैसे शिक्षा ग्रंथों मे संगीत संबंधी प्रमाण मिलते है | नारदीय शिक्षा के एक श्लोकानुसार हमें सप्त स्वरोंका उल्लेख मिलता है |

"उदात्ते निषादगंधारौ अनुदात्त ऋषभ धैवतो |
स्वरित प्रभवा ह्येते षड़ज मध्यम पंचमा" ||[36]

डॉ श्वेता जेजूरकर द्वारा, भीष्म स्कूल पुणे के, भारतीय प्राचीन ज्ञान के ऊपर आधारित ऑन लाइन अभ्यास की श्रृंखला में दिए गए व्याख्यान की स्लाईड के अनुसार; तथा उनके साथ दूरध्वनी से हुए साक्षात्कार के अनुसार, संगीत संबंधी कई तथ्य प्राचीन ग्रंथों में मिलते है | हमारे महा काव्य रामायण और महाभारत मे संगीत एवं वादन तथा नृत्य संबंधी अनगिनत प्रमाण मिलते है | इसी संदर्भ में लव-कुश ने मार्गी संगीत द्वारा भगवान राम को संतुष्ट किया था ऐसा उल्लेख मिलता है | मार्कन्डेय पुराण, वायु पुराण, कालिका पुराण जैसे पुराणों भी संगीत संबंधी उल्लेख पाए जाते है | मार्कन्डेय पुराण के 23 वे आध्याय मे सात स्वर, ग्राम, राग, मूर्छना, तान, लय, अलग अलग वाद्यों से संबंधित

[36] मित्तल अंजलि(2003).*भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत*.नई दिल्ली:कनिष्क पब्लिशर्स,डिस्ट्रीब्यूटस. पृष्ठ 65

प्रमाण मिलते है | वायु पुराण 86 और 87 आध्याय में सप्त स्वर, 3 ग्राम, 21 मूर्छना, 49 तान तथा ग्राम एवं मूर्छना के अन्तर संबंध के प्रमाण मिलते है | कालिका पुराण मे कुछ रागों संबंधी उल्लेख मिलते है| बाणभट्ट जी की 'कादंबरी', शूद्रक का 'मृच्छकटिक' तथा विष्णु शर्मा के 'पंचतंत्र' की नीति कथाएं जैसे प्राचीन साहित्य मे भी संगीत के प्रमाण मिलते है | भिन्न भिन्न प्रकार की जातक कथाओं मे भी संगीत के विषय मे जानकारी मिलती है| 'ललित विस्तार' नामक ग्रंथ में वीणा का तथा 'बों' से बाँसुरी को बजानेका उल्लेख मिलता है | 'गांधार आर्ट' तथा अजंता की गुफाओं के शिल्पों के माध्यमसे गौतम के संगीत के नियमित अभ्यास के तथ्य मिलते है | इसके अलावा नालंदा, विक्रमशीला तथा ओदन्तपुरी जैसे प्राचीन विश्व विद्यालयों में गंधर्व विद्या अर्थात संगीत के लिए पृथक विभाग होने के प्रमाण मिलते है | जयदेव के 'गीत गोविंद' तथा चैतन्य के 'कीर्तन' द्वारा भगवान को प्रसन्न करने के लिए संगीत का उपयोग देखने मिलता है |[37]

याज्ञवल्क्य स्मृति के प्रायश्चित्त कांड के 115 श्लोकानुसार संगीत का उपयोग मोक्ष प्राप्ती के लिए किया जा सकता है ऐसा उल्लेख मिलता है |

वीणा वादन-तत्वज्ञः श्रुति जाति-विशारदः|

तालश्च-प्रयासेन मोक्षमार्गम् नियाच्छति ||[38]

1.6.2 जैन काल में संगीत

जैन काल मे वैदिक अध्ययन में 'सामवेद' का तथा जैन सूक्तों के पठन में 'वैदिक संगीत' की परंपरा का स्थान महत्व पूर्ण था | जैन साहित्य तथा वाङमय में संगीत विषयक जानकारी तथा अनेक सांगीतिक वाद्यों के प्रमाण मिलते है | जैन धर्म ग्रंथों में बहत्तर अथवा चौसठ कलाओंका तथा स्वर

[37] जेजूरकर श्वेता, दूरध्वनी से साक्षात्कार, दिसंबर10, 2021

[38] *याज्ञवल्क्य स्मृति* (1967).(प्रथम आवृत्ती). वाराणसी : चौखम्बा पृष्ठ 465

के लिए 'घोष' शब्द प्रयोग का प्रमाण मिलता है |[39] इस काल में जन्मोत्सव, विवाह, राज्याभिषेक जैसे सामाजिक प्रसंगों में तथा विभिन्न उत्सवों में संगीत अंतर्भूत था |

1.6.3 बौद्ध काल में संगीत

बौद्ध काल मे गायन, वादन तथा नृत्य तीनों के प्रमाण अलग अलग क्रमांक की जातक कथाओं से मिलते है तथा वैदिक ऋचाओं की भाँति बौद्ध सूक्तों को सस्वर पढ़ने की परंपरा के उल्लेख "पाली", "महावाग" तथा "उदाग" मे स्पष्ट रूप से मिलते है | पाली 'त्रिपिटकों' के अंतर्गत गाथा गायन के अनेक वर्णन मिलते है |[40]

बौद्ध काल में संगीत, नृत्य, नाट्य को राजाश्रय मिलता था तथा स्वयं राजा भी संगीतकार होने के उल्लेख मिलते है | सर्व सामान्य जनता के लिए संगीत मनोरंजन तथा आजीविका का साधन था | इस काल में स्त्रीयाँ संगीत की साधना कर सकती थी तथा राज्यसभा में अपना गायन प्रदर्शित करती थी | इसी काल में 'बुद्धं शरणं गच्छामि' , 'धम्मं शरणं गच्छामि' जैसे मंत्र सांगीतिक आधार पर जपने जाने लगे | इस तरह से धार्मिक तथा लौकिक दोनों अर्थ में संगीत समाज से जुड़ गया था |

महर्षि पाणिनी ने अपनी "अष्टाध्यायी" में व्याकरण के साथ साथ समाज जीवन तथा संगीत का भी व्यापक वर्णन किया है |

1.6.4 मौर्य काल में संगीत

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति की दृष्टि से मौर्यकाल महत्वपूर्ण था | सर्वश्रेष्ठ मौर्य सम्राट अशोक के काल मे 'संगीत' तत्कालीन समाज का अभिन्न अंग होते हुए संगीत को राज्याश्रय उपलब्ध

[39] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 68

[40] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 71

था | अध्ययन के लिए सामवेद तथा शिक्षा ग्रंथों को महत्वपूर्ण माना जाता था | 'संगीत रत्नावली' ग्रंथ के अनुसार वीरांगना की बृहत् संस्था पर शासन का पूर्ण नियंत्रण हुआ करता था तथा इनको गीत, वेणु, मृदंग एवं वैशिकी आदि कलाओं की शिक्षा देने वाले आचार्यों को शासन के द्वारा योग्यतानुसार पुरस्कार दिया जाता था | संगीत कला का राजनीतिक दृष्टि से उपयोग मौर्यकाल की प्रमुख विशेषता मानी जाती है अतः राजनीति संबंधी गूढ रहस्यों को जानने के लिए संगीतज्ञ पुरुष तथा महिलाओं को नियुक्त किया जाता था |[41] चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री 'कौटिल्य' के 'अर्थशास्त्र' में संगीत संबंधी उल्लेख प्रचुर मात्रा में मिलते है | अर्थशास्त्र मे संगीतकार के लिए 'कुशीलव' (संगीतकार, नट) संज्ञाका तथा तूर्य, वीणा, वेणु, मृदंग, दुंदुभि जैसे वाद्यों का भी उल्लेख मिलता है | मौर्य काल में संगीत का स्थान महत्वपूर्ण रहकर उसका विकास होते हुए भी जैन एवं बौद्ध काल की अपेक्षा उसकी पुनीतता कुछ क्षीण हुई थी |

मौर्य वंश के बाद उत्तर भारत पर शुंग, कण्व, सातवाहन, कुषाण आदि वंशों ने राज्य किया तथा दक्षिण भारत मे चेर, चोल, पाण्ड्य राजाओं का राज्य था | परंतु उत्तर भारत में कुषाण वंश के राजा 'कनिष्क' के अलावा और कोई राजा प्रतापी न होने से सभी वंशों का पतन हुआ | शुंग आदि राज्यों मे बिगड़ी संगीत की स्थिति कनिष्क काल में कुछ ठीक हुई |

1.6.5 नाट्यशास्त्र के काल में संगीत

भारतीय संस्कृति के अनुसार 'पंचम वेद' माना जानेवाला आचार्य भरत कृत नाट्यशास्त्र ईसा पूर्व 200 से ई सन् 200 के बीच के काल का; नाट्य, संगीत, छंद, अलंकार, रस इत्यादि शास्त्रों के आदिग्रंथ के रूप में माना जाता है | नाट्य शास्त्र के 28 से 34 आध्याय मे संगीत संबंधी विस्तार पूर्वक विवेचन में 'राग' शब्द का उल्लेख मिलता है |

[41] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 80

1.6.6 गुप्त काल में संगीत

कुषाण वंश के अंत से अर्थात चौथी ई. में उत्तर भारत में गुप्त वंश की स्थापना हुई | इस काल मे साहित्य, संगीत, तथा अन्य ललित कलाओं के उत्तम विकास के साथ साथ संगीत का चरम उत्कर्ष भी इसी युग में होने के प्रमाण मिलते है अतः इस काल को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' माना जाता है | इस काल मे समाज के प्रत्येक वर्ग से संगीत जुड़ा हुआ था और संगीत के शास्त्रीय एवं लौकिक पक्ष का भी विकास हुआ था | इस गुप्त कालीन संस्कृति का प्रभाव सातवीं शताब्दी तक भारतीय संगीत एवं साहित्य पर दिखाई देता है | बौद्ध और जैन धर्म के प्रचार बाद वैदिक - सनातन संस्कृति के पुनर्निर्माण की अर्थात वैदिक यज्ञ एवं गान परंपरा की शुरुआत भी इसी काल से हुई | अतः सामगान की परंपरा भी इस काल में होगी ऐसा मान सकते है |

गुप्त वंश के प्रथम सम्राट 'समुद्रगुप्त प्रथम' संगीत तथा साहित्य प्रेमी थे | वे स्वयं कविताएँ लिखते थे और गाते थे तथा वीणा वादन में भी निपुण थे | इस काल में संगीत उत्सव मनाये जाते थे तथा राजा का 'विजय उत्सव' भी संगीत के माध्यम से मनाया जाता था|

समुद्रगुप्त के बाद 'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य' की सभा के नवरत्नों मे 'कालिदास' तथा 'अमरसिंह' जैसे विद्वानों को स्थान प्राप्त था | 'बाण' के 'हर्षचरित' में राजभवन के अंतर्गत आवश्यक अंगों के रूप में 'संगीतगृह' के होने का उल्लेख मिलता है |[42]

इस काल में नृत्य एवं वाद्यों का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में देखने मिलता है | पुत्र जन्म, विवाह आदि सामाजिक प्रसंगों में गीत तथा नृत्य के साथ आलिंग्य, झल्लरी, वेणु, अलाबु, वीणा जैसे वाद्यों

[42] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 87

का वादन होता था| 'बाण' के ग्रंथों द्वारा लोकगीत, लोकवाद्य तथा लोकनृत्य के प्रचुर उल्लेख पायें जाते है |

1.6.6.1 महाकवि कालिदास काल में संगीत

ई. चौथी-पाँचवी शताब्दी महाकवि 'कालिदास' का काल माना जाता है | कालिदास कृत नाटकों में तथा काव्यों में संगीत संबंधी उल्लेख मिलते है | 'भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन' पुस्तक के लेखक डॉ अरुण कुमार सेन लिखते है कि, "कालिदास के मेघदूत काव्य में उत्तर मेघ का वर्णन करते हुए गांधार ग्राम की मूर्छनाओं का उल्लेख मिलता है | 'विक्रमोर्वशीय' नाटक में कुकुभ राग के साथ जन्तालिका, चर्चरी, द्विपदिका, आदि प्रबंध गितियों का उल्लेख है | चर्चरी प्रबंध में ताल का महत्व चर्चरी ताल से प्रमाणित है | मंगल पदों के लिए विलंबित लय का उल्लेख कुमारसंभव में है | तत्कालीन स्त्रियाँ मृदंग वादन में प्रवीण थी | मृदंग के लिए शुद्रक ने अपने 'मृच्छकटिक' नाटक में 'प्रणव' शब्द का प्रयोग किया है जो नाट्यशास्त्र की उक्ति से मिलता है |"[43]

चौथी शताब्दि के निकट के काल के माने जाने वाले 'दत्तिल मुनि' का भारतीय संगीत में महत्वपूर्ण योगदान रहा है | उनके ग्रंथ में बाईस श्रुतियाँ, सात स्वर, दो ग्राम, मूर्छना, अठारह जातियों के बारेमें विस्तृत वर्णन मिलता है | वैदिक साम गान से गांधर्व गान तथा आगे आज के राग संगीत तक की भारतीय संगीत की सफल यात्रा में दत्तिल मुनि की संकल्पना तथा दृष्टिकोण की भूमिका एक महत्वपूर्ण सोपान है |

[43] सेन अरुणकुमार(2005).*भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन*. भोपाल : मध्यप्रदेश, पृष्ठ 18

1.6.7 वर्धन काल में संगीत

गुप्त वंश के बाद ‘वर्धन’ वंश का राज्य शुरू हुआ | इस वंश के प्रथम सम्राट ‘हर्षवर्धन’ संगीत एवं साहित्य के प्रेमी तथा शांति के पुजारी थे | वे उत्तम लेखक, गायक तथा नाटककार थे | हर्षवर्धन के राज्य मे भी संगीत उत्तम स्थान पर था | संगीत सभाओं के आयोजन होते थे | इन्होंने ‘रत्नावली’, ‘प्रियदर्शिका’ तथा ‘नागानन्द’ ये तीन नाटक लिखे थे |[44]

मतंग कृत ‘बृहद्देशी’-भारतीय संगीत के प्रमाणित ग्रंथ की रचना सातवी शताब्दी आसपास याने इसी काल की मानी जाती है | इस ग्रंथ में मतंग मुनि ने जातियों को राग की जननी मानते हुए राग का विस्तृत वर्णन तथा उसकी परिभाषा दी है जो आज भी मान्य है |

1.6.8 राजपूत काल में संगीत

तत्पश्चात डॉ विमालचंद पाण्डेय के अनुसार, “भारतीय इतिहास में सन 700 ई से 1200 ई तक का काल राजपूत काल कहलाता है | इस काल में, देश में राजपूत राज्यों का उदय हुआ था, जिसमें प्रतिहार, गहड़वाल, चाहमान, चालुक्य तथा परमार आदि जातियाँ थी |[45]

राजपूत काल में भी संगीत लोकप्रिय था | राजपूत स्त्रियाँ संगीत प्रेमी होते हुए गाने बजाने में प्रवीण थी | राजपूत स्त्रियाँ एक ओर युद्ध में तलवार लेकर सिंहनी की भाँति लड़ती थी तो दूसरी ओंर अपने प्रासाद में कोमल सुरों का गान करती थी | डॉ अरुण कुमार सेन के अनुसार आपातकालीन स्थिति में जौहर में जलकर मरने के पूर्व गायन-वादन के उल्लेख मिलते है | नारद कृत ग्रंथ ‘नारदीय शिक्षा’ का संभवतः यही काल माना जाता है | इसी काल मे मोहम्मद गजनी, शहाबुदधीन घोरी ने भारत देश पर आक्रमण किया था | डॉ अरुण कुमार सेन ने लिखा है कि, “ऐसा मानते है कि ईरान

[44] मित्तल अंजलि(2003).*भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत*.नई दिल्ली:कनिष्क पब्लिशर्स,डिस्ट्रीब्यूटस. पृष्ठ 72
[45] अशोक कुमार ‘यमन’(2015). *संगीत रत्नावली*. चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 99

के बादशाह बहेरमान गौर ने 1200 सगितज्ञों को ईरान बुलाकर नौकरी पर रख लिया था जिनमें अनेक लयवाद्य वादक भी थे |”[46]

दसवी शती के आसपास, कश्मीर के महान विद्वान अभिनवगुप्त ने, भरत कृत नाट्यशास्त्र के ऊपर ‘अभिनव भारती’ नामक अनुपम टीका लिखी |

इसी काल में महाकवि जयदेव ने ‘गीतगोविंद’ की रचना की, जिसमे राधा कृष्ण का प्रेम, विरह, श्रृंगार आदि का वर्णन करनेवाले पदों की रचना है जो जयदेव की ‘अष्टपदी’ कहलाती है |

1.6.9 मध्यकाल में संगीत

राजपुत काल के पश्चात तुर्की, खिलजी, तुग़लक, विजयनगर राज्य जैसे वंशोंने भारत के ऊपर राज्य किया | 1290-1320 खिलजी, 1320-1412 तुग़लक तथा विजय नगर, बहमनी तथा पोर्तुगालों का प्रवेश काल 1350-1556 तक का माना जाता है |[47]

ई 1210 से 1388 राज दरबार मे गज़ल का प्रचार था | सुल्तान इल्तुतमिश, शहजाद मुहम्मद, अलाउद्दीन खिलजी, कुतुबुद्दीन, मुबारकशाह खिलजी, गयासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद तुगलक, और फिरोज तुगलक तक के युग में गजल को सम्मान प्राप्त हुआ था |[48]

ई. 1290-1320 के खिलजी काल में प्रथम शासक अलाउद्दीन खिलजी संगीत प्रेमी था | उसीके दरबार में आमिर खुसरो नामक प्रसिद्ध फारसी कवि था | भारतीय संगीत मे भी आमिर खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है | आमिर खुसरो ने कव्वाली गायन शैली का सर्जन किया | साजगिरी, सरपरदा, झिलफ़ जैसे रागों की रचना की | वीणा के आधार पर सितार का; तथा मृदंग को

[46] सेन अरुणकुमार(2005).*भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन.* भोपाल : मध्यप्रदेश, पृष्ठ 19

[47] अशोक कुमार ‘यमन’(2015). संगीत रत्नावली. चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 99

[48] मित्तल अंजलि(2003).भारतीय सभ्यता संस्कृति एवं संगीत.नई दिल्ली:कनिष्क पब्लिशर्स,डिस्ट्रीब्यूटस. पृष्ठ 74

काटकर तबला एवं बाएं का निर्माण तथा प्रचार कार्य किया | अनेक साहित्य, शास्त्र एवं धर्म ग्रंथों की रचना की | कुछ इतिहासकार आमिर खुसरो को ख्याल का जनक भी मानते है परंतु इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं है |

1.6.9.1 संगीत रत्नाकर काल में संगीत

तेरहवी शताब्दी में कश्मीर में जन्मे महान संगीतज्ञ 'शार्ङ्गदेव' ने, नाट्यशास्त्र एवं बृहद्देशी के आधार पर 'संगीतरत्नाकर' नामक अत्याधिक महत्वपूर्ण ग्रंथ का सृजन किया | भागवत शरण शर्मा के अनुसार, 'संगीतरत्नाकर' सप्ताध्यायी होकर उपलब्ध संगीत ग्रंथों का मुकुट होने के कारण प्राचीन कालीन 'नाट्यशास्त्र' की प्रतिष्ठा मध्यकालीन 'संगीतरत्नाकर' को प्राप्त हुई |[49] इस ग्रंथ को उत्तर हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटकी अर्थात दोनों पद्धतियों में 'प्रमाणभूत' ग्रंथ के रूप में माना जाता है | संगीतरत्नाकर के सात अध्यायों के माध्यम से; प्राचीन समय में प्रचलित शास्त्रीय संगीत की अलग अलग विधाओं – जैसे राग, गीतियाँ. जातिगान, ताल, प्रस्तुतिकारण, वाद्य तथा नर्तन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है | वर्तमान काल के सभी (मिलते जुलते) वाद्यों का वर्णन भी 'संगीतरत्नाकर' में मिलता है |[50]

1.6.10 मुग़ल काल में संगीत

1.6.10.1 बाबर काल

ई 1526, बाबर से मुग़ल काल की शुरुआत हुई | बाबर स्वयं अच्छा गायक और संगीतज्ञ होने के साथ साथ अन्य गायक तथा कलाकारों का सम्मान करता था | हारे हुए योद्धाओं की छावनी मे संगीत का आयोजन कराता था | बाबर संगीत को मुख्यत: मनोरंजन का साधन मानता था | अतः

[49] शर्मा भागवतशरण, *भारतीय संगीत का इतिहास* पृष्ठ 144-145

[50] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 732

उसके काल मे संगीत में श्रृंगारिकता का प्रवेश हुआ | पंद्रह वी शताब्दी अर्थात बाबर काल में जौनपुर के बादशाह सुल्तान 'हुसेन शर्की' ने ख्याल गायकी को सर्व प्रथम प्रचलित किया | इसी काल मे दक्षिण के संगीतज्ञ रामामात्य ने 'स्वरमेल कलानिधि' नामक ग्रंथ लिखा |

1.6.10.2 हुमायू काल

बाबर के बाद ई 1530 में हुमायू राजगद्दी पर बैठा | वो अच्छा कवि एवं संगीतज्ञ था | उसके काल में गीत, भजन आदि का अच्छा प्रचार हुआ था | उसीके काल में ग्वालियेर के राजा 'मानसिंह तोमर' ने वर्तमान ध्रुपद शैली का प्रारंभ एवं प्रचार किया था | इन्होंने 'मानकुतूहल' नामक ग्रंथ लिखा जिसमें रागों की संख्या तथा उनके प्रकारों की व्याख्या तथा स्वरचित पदों को संकलित किया है |

1.6.10.3 अकबर काल

1550 से 1605 ई तक अकबर ने राज्य किया | विष्णु नारायण भातखंडे जी के 'ए हिस्टॉरिकल सर्वे ऑफ दी म्यूजिक ऑफ अपर इंडिया', पृ 24 के अनुसार, "अकबर के दरबार के 36 संगीतज्ञों के नामों में चार या पाँच नाम हिन्दू संगीतज्ञों के भी थे |"[51] सम्राट अकबर के काल मे ही तानसेन, बैजु बावरा तथा तानसेन के गुरु एवं भक्त कवि स्वामी हरीदास जैसे महान संगीतज्ञ हुए थे | अकबर के समय में ही कर्नाटकी संगीतज्ञ एवं महान कवि पुण्डरीक विट्ठल ने संगीत के चार ग्रंथ लिखे – 1. सद्रागचन्द्रोदय 2. रागमाला 3. रागमंजिरी 4. नर्तननिर्णय

1.6.10.4 जहांगीर काल

ई 1605 मे अकबर का पुत्र जहांगीर गद्दी पर आया | जहांगीर, कला एवं संगीत का अत्यधिक प्रेमी होते हुए संगीत मे ऐसे डूब जाता था कि उसे खाने पीने की सुध नहीं रहती थी | वो साहित्य,

[51] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 99

नृत्य, गीत इत्यादि सभी का प्रेमी था | तत्कालीन संगीत में श्रृंगार रस की प्रधानता थी और जहांगीर भी श्रृंगार रस प्रधान गजले लिखता था | जहांगीर के काल में ही पंडित दामोदर कृत 'संगीतदर्पण' की रचना हुई जिसका फारसी में भी अनुवाद हुआ था | दक्षिण के ग्रंथकार सोमनाथ का 'रागविबोध' भी इस काल मे लिखा गया था |

1.6.10.5 शाहजहाँ काल

ई 1628 में उसके पुत्र शाहजहाँ ने गद्दी संभाली | शाहजहाँ भी अच्छा गायक एवं सितार वादक था | समय समय पर वो संगीत की प्रतियोगिता एवं सम्मेलनों का आयोजन करता था तथा धर्म की दृष्टि से पक्षपात किये बिना कुशल कलाकारों को पुरस्कृत करता था | फिर भी, संगीत की पवित्रता धीरे धीरे कम होने लगी थी और संगीत का व्यवसाय करनेवाले तथा निम्न स्तर के लोगों के हाथों संगीत पड़ गया |

1.6.10.6 औरंगजेब काल

ई 1658 में औरंगजेब गद्दी पर आया | इसके काल तक संगीत विलासिता की ओंर झुका था| संगीत व्यवसाय मे परिवर्तित हुआ था | मंदिरों में शुद्ध भाव से गाया जानेवाला संगीत, बाज़ार में जा पहुँचा और भक्ति-भाव की जगह श्रृंगार ने ली और संगीत श्रृंगार रस प्रधान बन गया और साथ साथ लोगों का चारित्र्य भी बिगड़ने लगा | अतः औरंगजेब संगीत के शुद्ध स्वरूप से वंचित रहा और विलासी संगीत उसकी नजर समक्ष आया; जो उसे कतई पसंद नहीं था | एस एम टैगौर, यूनवर्सल हिस्ट्री ऑफ म्यूजिक, पृ 58 के अनुसार, संगीत के बारे में औरंगजेब ने कहा था कि, "संगीत को कब्र में इतना गहरा दफ़ना दो कि, दोबारा न तो संगीत न ही उसकी गूंज सुनाई दे |"[52]

[52] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 99

तदुपरांत संगीत का विकास होता रहा | पंडित अहोबाल का 'संगीत पारिजात'; लोचन कृत 'राग तरंगिणी'; हृदय नारायण देव कृत 'हृदय कौतुक' तथा 'हृदय प्रकाश'; भवभट्ट के 'अनूप संगीतविलास', 'अनुपांकुश', 'अनूप संगीत रत्नाकर' इत्यादि ग्रंथों का निर्माण इसी काल मे हुआ|

1.6.10.7 मुहम्मद शाह काल

मुहम्मद शाह रँगीले ने ई 1719-1748 तक राज्य किया | वो कला एवं संगीत का अत्यंत प्रेमी था तथा संस्कृति एवं संगीत का संरक्षक भी था | वो नाच- गाने का बड़ा शौकीन होने से उसका नाम "रंगीला" पडा था | उसके ही दरबारी गायक 'सदारंग' तथा 'अदारंग' ने अनेक ख्यालों की रचना की तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत को समृद्ध बनाया | शोरी मियाँ अर्थात गुलाम नबी ने टप्पों की रचना भी इसी काल में की थी | पश्चात कई उत्तराधिकारी राजा हो गए परंतु कला की दृष्टि से उनका कोई विशेष योगदान नहीं रहा |

1.6.10.8 बहादुर शाह जफ़र काल

सन 1837 मे मुग़ल वंश का अंतिम सम्राट बहादुर शाह गद्दी पर बैठा | वो कवि था तथा संगीत प्रेमी था |उसके दरबार में योद्धाओं की अपेक्षा लेखक तथा कविओं की संख्या अधिक थी और संगीतज्ञों को आश्रय मिलता था| प्रसिद्ध कवि 'मिर्झा गालिब' उसी के दरबार में था|

उस के बाद ई 1857 में मुग़ल युग का अंत हुआ और अंग्रेज शासन का प्रारंभ हुआ| पंडित श्रीनिवास का 'राग तत्व विबोध' इसी काल का ग्रंथ है |

1.6.11 अंग्रेज काल में संगीत

यूरोपवासी जब पहेली बार भारत में आयें तब भारतीय संगीत के प्रति वे उदासीन थे | उस काल में, भारतीय संगीत को कोई आश्रय ना मिलनेसे श्रेष्ठ संगीतज्ञ अपनी कला की विरासत आने

वाली पीढ़ी को न दे सकें| अतः मंदिरों मे रहेनवाला संगीत विलसिता एवं विषय वासना की उत्तेजक प्रवृत्तियों में परिवर्तित हो गया और घृणित एवं त्याज्य माना जाने लगा | इसी समयकाल मे कईं विदेशी ग्रंथकारों जैसे डेबल, फॉक्स, कर्नल पेटर इलियस, कैप्टन विलर्ड इत्यादि द्वारा भारतीय संगीत के विषय में पुस्तके लिखी गई | इसमें से कैप्टन विलर्ड द्वारा लिखित 'ए ट्रीटिस ऑन द म्यूजिक ऑफ हिंदुस्तान' महत्वपूर्ण है जिस ग्रंथ ने भारतीय संगीत का सही मूल्यांकन विदेशी संगीतकारों के समक्ष रखा |[53]

19 वी शताब्दी के पूर्वार्ध में मुहम्मद रजा नामक विद्वान ने 'नगमाते आसफ़ी' नामक समीक्षा ग्रंथ लिखा | शताब्दी के मध्यकाल में कृष्णानन्द व्यास ने 'राग कल्पद्रुम' ग्रंथ की रचना की | बंगाल में कृष्णधन बॅनर्जी का 'गीत सूत्रसार' तथा दक्षिण के त्यागराज, श्यामा शास्त्री आदि सगितज्ञों की कर्नाटकी संगीत की सेवाएं इसी काल में उल्लेखित है | इसी काल में भारतीय संगीत के गगन में दो तारों का – विष्णु नारायण भतखंडे और विष्णु दिगम्बर पलूसकर जी का उदय हुआ जिन्होंने संगीत की आजीवन सेवा की और अपमानित भारतीय संगीत को पुनः उचाइयों पर बिठाया | दोनों महानुभावों ने अपनी अपनी स्वतंत्र स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया और प्राचीन संगीत परंपरा तथा शास्त्र को अधिक सरल बनाया | संगीत के प्रति संकुचित भाव नष्ट करने हेतु ग्वालीयर, लखनौ, बड़ौदा मे संगीत विद्यालयों की स्थापना की | इसप्रकार से भातखंडे जी और पलूसकर जी दोनों ने ही, तिरस्कृत भारतीय संगीत में 'आदर-सत्कार' रूपी संजीवनी शक्ति डालकर संगीत के नवयुग का प्रारंभ किया|

1.7 भारतीय संगीत की बानियाँ

अभिजात भारतीय संगीत को वैदिक काल से लेकर आज के आधुनिक काल के शास्त्रीय संगीत तक पहुचने के लिए साम गान, जाति गान, गीति गान, ध्रुव गान, प्रबंध गान, ध्रुपद गान जैसी अनेक

[53] सेन अरुणकुमार(2005).*भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन.* भोपाल : मध्यप्रदेश हिन्दी अकादमी, पृष्ठ 36

भिन्न भिन्न शैलियों से प्रवाहित होना पडा | कालानुरूप प्रत्येक शैली का अपना स्थान तथा महत्व था| आधुनीक ख्याल शैली का आविष्कार तथा उसके विकास के बारे में अनेक मान्यताएँ है तथापि कई विद्वान 'ख्याल' का आविष्कारक आमिर खुसरो को; तथा ख्याल का विकास ध्रुपद शैली से मानते है| ध्रुपद की रचना प्रबंध आधारित होने से, प्राचीन काल में ईश्वर आराधना के लिए ध्रुपद गाया जाता था| ध्रुपद गायन की विशिष्ट पद्धति को 'बानी'(वाणी) कहते है और आज चार 'बानियाँ' प्रचलित है| डॉ राजेश केलकर जी ने अपने शोध प्रबंध में बानियों के बारे में विस्तार से लिखा है; उसी के आधार पर बानियों को यहाँ संक्षेप में लिखा गया है |

1.7.1 गोबरहार या गौहार बानी

तानसेन तथा उसके शिष्य वर्ग ने इस बानी का प्रचार किया | इस बानी की शुरुआत ग्वालियर में होने से इसे 'ग्वालियर बानी' भी कहा जाता है | इस बानी में गाए जानेवाले ध्रुपद सरल होते है तथा धीमी गति की रचना ओं के लिए यह बानी उपयुक्त मानी जाति है | इस बानी की सांगीतिक रचना से मुख्यत: शांत एवं गंभीर रस की निर्मिती होती है | 'शुद्धता' इस बानी की विशेषता है|

ग्वालियर घराना तथा उसकी शाखाएं जैसे रामपुर और सहसवान का उद्भव इस बानी से माना जाता है | गोविंदराव तांबे के अनुसार उस्ताद अल्लादियाँ खाँ साहब के पूर्वज भी इसी बानी से माने जाते है | तानसेन की वंश परंपरा से आया 'सेनिया' घराना तथा 'किराना' घराने का उद्गम भी इसी बानी से माना जाता है |

1.7.2 डागर या डागुर बानी

जहांगीर तथा शाहजहाँ के शासन काल दरमियान यह बानी अस्तित्व मे आयी | गोबरहार बानी की तुलना में इस बानी की रचनाओं की गति धीमी होती है | यह बानी अधिक भावपूर्ण मानी जाति है | 'धमार' शैली का उद्भव इस बानी से माना जाता है | इस बानी का स्वभाव गंभीर है|

सहारनपुर घराने का उद्भव इस बानी से हुआ है तथा इसी बानी के कुछ कलाकार अतरौली जाकर बसे और अतरौली की दूसरी शाखा शुरू की |

1.7.3 खंडहार बानी

राजा समोखन सिंह इस बानी के प्रवर्तक माने जाते है परंतु कई विद्वान राजपूताना प्रांत के नौबत खाँ को इस बानी का संस्थापक मानते है | इस बानी की रचनाएं मध्यम से तेज गति की होती है | इस बानी में लयकारी का विशेष महत्व है | इसमें गायकी का प्रस्तुतिकरण प्रबलता से किया जाता है अतः इस से वीर रस की निर्मिती होती है | ख्याल गायकी की 'मेरुखण्ड' पद्धति का उद्गम भी इसी बानी से हुआ है |

सिकंदराबाद घराने का उद्भव खंडहर बानी से माना जाता है | 'रमज़ान खाँ रंगीले' या 'मियाँ रंगीले' के नाम से ये घराना जाना जाता है तथा उस्ताद फ़ैयाज़ खाँ अपने पिता, सफ़दर हुसैन खाँ की तरफ से इस बानी से जुड़े थे |

1.7.4 नौहार बानी

श्रीचंद राजपूत नौहार बानी के प्रवर्तक माने जाते है | अन्य मतानुसार वे दिल्ली के पास नौहार में रहेते थे अतः उनके नाम से बानी का नाम नौहार बानी पड़ा | परंतु आगरा घराने के विद्वान गायक यूनुस हुसैन खाँ के मतानुसार 13 वी शताब्दी के गोपाल नायक जिन्हे आज भी आगरा घराने के प्रवर्तक के रूप में माना जाता है; वो ही इस बानी के प्रवर्तक माने जाते है | इस बानी की गति में उछाल होने से यह मध्य लय तथा द्रुत गति की रचनाओं के लिए उपयुक्त है | काल क्रमानुसार इस बानी का ह्रास होने पर राजस्थानी लोक संगीत गायकों ने इसे लोक संगीत में जोड़ दिया | भिन्न भिन्न अलंकार तथा गमकों का प्रयोग इस बानी में महत्तम मात्रा में किया जाता है अतः इस बानी से शांत और करूण रस की अपेक्षा 'अद्भुत' रस की निर्मिती अधिक दिखाई देती है |

आगरा घराना तथा उसकी शाखाएं जैसे तानरस खाँ का दिल्ली घराना, खुर्जा घराना, पुत्तन खाँ का अतरौली घराना आदि का उद्भाव नौहार बानी से माना जाता है |[54]

1.8 भारतीय संगीत के विविध घराने

उपरोक्त विवेचन से हमने देखा कि, वेद काल से चली आयी संगीत परंपरा को अलग अलग समय पर अलग अलग दौर से गुजरना पड़ा और इसी के साथ साथ वैदिक ऋचा सूक्तों के गान से चली गेय परंपरा भी मार्गी-देशी, राग-रागिनी, ग्राम-मूर्च्छना, जाति, प्रबंध, ध्रुपद, ख्याल जैसे विभिन्न प्रकोरों में परिवर्तित होती रही | इसी कारण से आज के काल में होनेवाली संगीत की अभिव्यक्ति प्राचीन अभिव्यक्ति से भिन्न है | संगीत एक गुरुमुखी विद्या है | संगीत के अलावा जो भी सारी ललित कलाएं जैसे चित्र, शिल्प, वस्तु, नृत्य, ई. की परंपरा या परंपरागत शैलियाँ प्राचीन मंदिर, गुफाएँ इत्यादि मे दृश्य स्वरूप में उपलब्ध है | परंतु स्वरशास्त्र तथा उसकी कलात्मकता की अभिव्यक्ति प्रत्येक समय के उन विशिष्ठ पलों की अनुभूति होती है | शास्त्रीय ग्रंथों के आधार पर परंपरा का जतन करते हुए एवं पीढ़ी दर पीढ़ी पारंपरिक तत्वों के आधारित स्वर निर्मिती होनेपर भी अभिव्यक्ति की अनुभूति केवल श्रवण गम्य होने से वो लंबे समय तक रह नहीं सकती(टिक नहीं सकती)| तदुपरांत विलंबित से द्रुत लय तक जानेवाला भारतीय शास्त्रीय संगीत का कौशल्यपूर्ण प्रकटीकरण व्यक्तिगत होता है | और इस प्रकटीकरण में कलाकार को प्राप्त हुआ ज्ञान, उसके कंठ की तय्यारी, प्रकटी करण की पद्धति आदि सब पृथक होता है | अर्थात कलाकार के व्यक्तिगत सामर्थ्य के अनुसार जिसे जो प्राप्त हो तथा पसंद हो वैसी ही अभिव्यक्ति हो सकती है | यहाँ भारतीय शास्त्रीय संगीत का वैश्विक भाव; व्यक्तिगत भाव में परावर्तित हो जाता है और शोधार्थी के मतानुसार यहीं से 'घराना' या 'संप्रदाय' की नीव पड़ती है | अतः संक्षेप में 'घराना' याने विशिष्ठ स्वरलंकारों की सांगीतिक अभिव्यक्ति | प्रो. मधुबाला सक्सेना

[54] केलकर राजेश(2015). *आगरा घराने का भारतीय संगीत में सृजनात्मक योगदान.* एम एस यूनिवर्सिटी, बड़ौदा, आध्याय 1 पृष्ठ 22-24.

तथा राकेश बाला सक्सेना के अनुसार, " शताब्दियों से चलती आ रही परंपरा, उच्च कोटी के गुरु व शिष्य, उनके व्यक्तिगत संबंध, स्नेह, श्रद्धा, विश्वास तथा अपनत्व की भावना, शैक्षणिक मर्यादाएँ, सीमाएँ तथा अनुशासन आदि सब मिलकर घराने के अर्थ को स्पष्ट करते है |"[55]

'घर' शब्द से 'घराना' शब्द की निर्मिती हुई है | घर याने चार दीवारी में मानी जानेवाली परम्पराएँ अथवा रीतियाँ | संगीत के संदर्भ में यही परम्पराएँ स्वर सौन्दर्य एवं रसनिष्पत्ति करनेवाली विशिष्ठ 'शैलियाँ' कहलाती है | इस रीति या शैली का सर्वप्रथम जिस किसीने आविष्कार किया हो वह उसका 'संस्थापक' माना जाता है | और उस व्यक्ति के नाम से या निवास स्थान से या गाँव से 'घराने' का नाम दिया जाता है | अर्थात संस्थापक 'गुरु' कहलाता है और 'गुरु' से तालिम लेकर उस शैली का अनुकरण करनेवाला 'शिष्य' बनता है| अत्यंत प्राचीन काल से इसी गुरुशिष्य प्रणाली से सांगीतिक ज्ञान की लेन देन शक्य हुई है | 'घराना' या 'संप्रदाय' के निर्माण के लिए और भी कुछ तर्क या कारण दिखाई पड़ते है जो निम्न लिखित है |

1. राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों के परिवर्तन के कारण संगीतज्ञों के बीच होनेवाली परस्पर स्पर्धा |
2. मुसलमान गायक हिन्दू साहित्य तथा भाषा समझने में सक्षम न होने से भिन्न भिन्न स्वर प्रयोग|
3. स्वाभाविक सीमाएँ या कंठ ध्वनि के दोष के कारण अपने योग्य गायन पद्धती को विकसित करना |
4. संगीतज्ञों का संकुचित दृष्टिकोण
5. आर्थिक रूप से आश्रयदाताओं के आधीन होने से केवल उन्हे खुश कर सके ऐसी शैली का विकास करना इत्यादि |

---

[55] अशोक कुमार 'यमन'(2015*). संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 99

इस प्रकार से घरानों का अस्तित्व निर्माण हुआ | परंतु यह अस्तित्व जीवंत रखने के लिए अत्यंत सूक्ष्म रूप से इन पद्धतिओं का शिष्यद्वारा अभ्यास करना आवश्यक है | अर्थात हमारी प्राचीन गुरु शिष्य प्रणाली द्वारा ही ये संभव है | अतः भिन्न भिन्न शैली के, मूल प्रवर्तक या गुरु के माध्यम से कई संगीत साधकों को ज्ञान दिया जाने लगा जिससे विशिष्ठ परंपरागत शैली का विकास हुआ | पीढ़ी दर पीढ़ी इस संगीत के संस्कारों को हस्तांतरित किया गया जिससे एक विशिष्ठ सांगीतिक तत्वों से युक्त प्रतिष्ठित घराने का उद्भव, विकास और विस्तार होने लगा |

हमारे अति प्राचीन शास्त्रीय संगीत की आज तक की यात्रा एवं विकास क्रमश: अर्थात शनै: शनै: हुआ है | इस विकास यात्रा में कई प्रणालियाँ अस्तित्व में आयी और गयी परंतु भारतीय संगीत का प्रवाह चलता ही रहा | कई विद्वानों के मतानुसार, 8 वी से 12 वी शताब्दी के बीच अर्थात राजपूत काल में 'घरानों' की नीव पड़ी थी | कुछ विद्वानों के अनुसार घरानों का आरंभ मुग़ल काल के अंतिम समय में हुआ था | इतिहास के आधार पर 16 वी शताब्दी से पूर्व भारतीय संगीत का स्वरूप मुख्यतः से धार्मिक था और ध्रुपद गायन परंपरा के रूप में प्रचलित था | तत्पश्चात यह संगीत मनोरंजन तथा श्रृंगार की ओंर मुड़ने लगा और 'ख्याल' का चलन शुरू हुआ | और **ख्याल** के संदर्भ में ही **'घराना'** शब्द का प्रयोग किया जाने लगा | क्योंकी ध्रुपद-धमार एवं ठुमरी पेश करनेवाले कलाकारों के भी घराने होते है | किन्तु **'ध्रुपद-धमार'** के घरानों को **"बानी"** तथा **'ठुमरी'** के घरानों को **"बाज"** कहा जाता है |[56]

कई विद्वान, 14 वी शताब्दी के आमिर खुसरों को, कई 15 वी शताब्दी के जौनपुर के राजा हुसेन शर्की को तथा कई विद्वान 18 वी शताब्दी के सदारंग-अदारंग को ख्याल के निर्माता मानते है | ख्याल के प्रवर्तक कोई भी हो तथा ख्याल की निर्मिती किसी भी शतक की हो परंतु आज से करीब 200 साल पहेले सदारंग-अदारंग के समय से ही 'ख्याल गायकी' लोकप्रिय होने लगी और ध्रुपद का

[56] आठवले वि रा(2008). *नादचिंतन*. मुंबई : संस्कार प्रकाशन. पृष्ठ 9

स्थान ख्याल ने ले लिया | ख्याल गायन में कलाकार राग के नियमों का पालन करता हुआ, स्वतंत्रता से अपनी प्रतिभा दिखाता था | इसके लिए वह विभिन्न आलाप-तानों की रचना करके, अलंकार तथा लयकारी ओं के चमत्कारों से बंदिश को सुमधुर बनाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करता था | इसप्रकार से राग समान होते हुए भी उनका प्रस्तुति करण अलग अलग ढंग से होता था | प्रस्तुतीकरण के ये अलग अलग 'ढंग' ही 'घराने' कहेलाने लगे और ये घरानों की परंपरा आज तक जीवित है | शास्त्र की मर्यादाओं के अनुशासन मे रहेते हुए; रागों की पसंदगी, ख्याल की बंदिश, आवाज लगाने का ढंग, रागविस्तार अथवा आलापकारी की पद्धति, तान तथा बोलतानों का प्रयोग, लयकारी आदि बातों के आधार पर कलात्मक प्रस्तुतीकरण के हेतु से भारतीय शास्त्रीय गायन के प्रमुख घराने निम्न लिखित है|

1. ग्वालियर घराना
2. आगरा घराना
3. जयपुर घराना
4. दिल्ली घराना
5. किराना घराना
6. पटियाला घराना
7. सहसवान रामपुर घराना

1.8.1 ग्वालियर घराना

स्व. नत्थन पीर बक्श इस घराने के प्रवर्तक माने जाते है और इस घराने की परंपरा को आगे चलाने वाले प्रमुख कलाकारों में हस्सू खाँ, हद्दू खाँ, नत्थू खाँ, निसार हुसेन खाँ, शंकरराव पंडित, कृष्णराव शंकरराव पंडित, राजा भैया, बालकृष्ण इचलकरंजिकर, विष्णु दिगम्बर पलूसकर, ओंकारनाथ ठाकुर, डी वी पलूसकर, नारायणराव पटवर्धन, बी आर देवधर, रामकृष्ण वझे आदि का समावेश होता है |

ध्रुपद अंग के ख्याल, जोरदार तथा खुली आवाज, सपाट तान, बोलतान, गमक, बहलावा, टप्पे की प्रस्तुति आदि इस घराने की विशेषताएं है |

डॉ शन्नो खुराना के अनुसार, “इस घराने की गायकी अष्टांग गायकी है जिसमें आलाप, बोल आलाप, बहलावा, तान, बोलतान, लयकारी,गमक,खटका, कण, मुर्की, मींड़ तथा सूत का प्रयोग किया जाता है |”[57]

1.8.2 आगरा घराना

यह घराना अकबर के काल से प्रारंभ हुआ और हाजी सुजान खाँ- तानसेन के दामाद इसके प्रवर्तक माने जाते है | इस घराने की परंपरा को आगे बढ़ाने में धग्धे खुदाबक्श का योगदान मूल्यवान है तथा उस्ताद फ़ैयाज खाँ ने इस घराने को बहुत प्रसिद्धि दिलाई | इनके अलावा नत्थन खाँ, भास्करराव बखले, गोविंदराव टेंबे, विलायत हुसैन खाँ, आता हुसैन खाँ, अज़मत हुसैन खाँ, दिलीपचंद्र बेदी, जगन्नाथबुवा पुरोहित, श्रीकृष्ण नारायण रातंजनकर, खादिम हुसैन खाँ, लताफत हुसैन खाँ, शराफत हुसैन खाँ, मधुसूदन जोशी, दिनकर कायकीणी, श्रीकृष्ण उर्फ बबनराव हलदणकर, ललित राव, के जी गिण्डे, एस से आर भट, सुमति मुटाटकर, उल्लास कशालकर, वासीम् अहमद खाँ आदि प्रमुख कलाकार है |

खुली और जोरदार आवाज, नोम-तोम युक्त आलाप तथा लयकारिया, स्वरों की क्रमानुसार बढ़त से राग विस्तार, बोलबाँट , बोलतान, ध्रुपद-धमार में प्रवीणता इत्यादि इस घराने की विशेषताएं है |

[57] अशोक कुमार ‘यमन’(2015*). संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 493

1.8.3 जयपुर-अतरौली घराना

इस घराने के प्रवर्तक के रूप मे महम्मद अली खाँ साब, मुबारक अली, मनरंग तथा अल्लादिया खाँ साब का भी नाम लिया जाता है | किन्तु अल्लादिया खाँ इस घराने के सुप्रसिद्ध कलाकार रहे है और जादातर लोग उन्ही को प्रवर्तक मानते है | खाँ साब की विशेष शैली के कारण एक अलग घराना अस्तित्व में आया, जिसे लोग 'अल्लादिया खाँ, घराना' भी कहते है| जयपुर घराना ही एक ऐसा घराना है कि जिसमें गायक और वादक दोनों का समावेश होता है |

राजब आली खाँ, हैदर खाँ, धोंडूताई कुलकर्णी, केसरबाई केरकर, वमानराव सडोलिकर, मल्लिकार्जुन मंसूर, मोगूबाई कुर्डीकर, निवृत्ति बुवा सरनाइक, किशोरी अमोणकर, श्रुति सड़ोलिकर, अश्विनी भिड़े आदि प्रमुख कलाकार है |

गीत की संक्षिप्त बंदिश, आवाज लगाने का अपना ढंग, वक्र एवं छोटी ताने, स्वर एवं लय का समान रूप से महत्व, केवल आकार युक्त गायन, स्वर सौन्दर्य पर विशेष बल तथा अप्रचलित रागों कि प्रस्तुति आदि इस घराने कि विशेताएं है |

1.8.4 दिल्ली घराना

आजकल के प्रचलित घरानों मे दिल्ली घराना सबसे पुराना घराना माना जाता है | पुराने समय से दिल्ली राजधानी होने से सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं उत्सवों की ऐतिहासिक नगरी मानी जाती थी जिसमें विभिन्न प्रकार के गायक तथा वादक थे | मिया अचपल खाँ को दिल्ली घराने के प्रवर्तक माने जाते है | इनके शिष्य कुतुब बक्श जिन्हे दिल्ली के अंतिम सम्राट बहादुर शाह जफ़र द्वारा 'तानरस खाँ' की उपाधि प्रदान की गई थी, इस घराने के उत्तम एवं प्रसिद्ध गायक थे | उमराव बंदू खाँ, हिलाल अहमद खाँ, नासिर अहमद खाँ, इकबाल अहमद खाँ, प्रो कृष्णा बिष्ट, डॉ भारती चक्रवर्ती आदि इस घराने के प्रसिद्ध कलाकार रहे है |

राग की शुद्धता का पालन, स्वर के क्रमानुसार राग की बढ़त, विलंबित लय की बंदिश जिसमें सूत मींड़ गमक लहक आदि का प्रयोग, जटिल तानें – जैसे सवाल-जवाब की तान, दाव-पेंच की तान, झूले की तान, फंदे की तान इत्यादि दिल्ली घराने की विशेषता मानी जाती है |

डॉ शन्नो खुराना कहेते है कि, "कुछ विद्वानों ने दिल्ली घराने को ही सभी घरनों की जड़ माना है, क्योंकी सदारंग; जिन्होंने ख्याल गायन का प्रचार किया था यही के निवासी थे|[58]

1.8.5 किराना घराना

बीनकार उस्ताद बंदे आली खाँ साब को इस घराने के प्रवर्तक के नाम से जाना जाता है | तथापि उ. अब्दुल करीम खाँ तथा उ. अब्दुल वहीद खाँ ने इस घराने को प्रसिद्ध किया | उ. करीम खाँ साहब की सुमधुर आवाज और आवाज लगाने के निराले ढंग से वे अधिक लोकप्रिय हुए और उनके साथ घराना भी लोकप्रिय हुआ | स्व. राम भाऊ कुंदगोलकर (सवाई गंधर्व), सुरेश बाबू माने, हिरबाई बडोदेकर, सरस्वती बाई राणे, गंगुबाई हंगल, रजब अली खाँ(देवास), बहरे बुवा, रोशन आरा बेगम, फिरोज दस्तूर, माणिक वर्मा, पं भीमसेन जोशी, बसवराज राजगुरु, डॉ प्रभा अत्रे आदि इस घराने के लोकप्रिय कलाकार है |

स्वरों का सुरीला पन, स्वर लगानेका भावपूर्ण ढंग, आलाप प्रधान गायकी, एक एक स्वर लेकर विलंबित बढ़त, मींड़ का प्रयोग, गमकयुक्त ताने, ठुमरी गाने की प्रथा, लयकारी, बोलतान की तुलना मे सरगम का प्रयोग जादा ई. इस घराने की वैशिष्ठ्य पूर्ण बातें है | श्री जयंत खोत के अनुसार, "इस घराने में सरगम गाने की प्रथा अन्य घरानों से उत्कृष्ट है |"[59]

[58] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 494

[59] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 498

1.8.6 पटियाला घराना

पटियाला में जन्मे लोकप्रिय गायक अलिबक्श तथा उनके साथी उ. फतेह अली से (संक्षेप में इन्हे 'अलियाफ़त्तू संबोधित किया जाता है) इस घराने की निर्मिती हुई ऐसा माना जाता है | इन्होंने जयपुर घराने के मुबारक अली से तथा दिल्ली घराने के तानरस खाँ से तालिम पायी थी | अन्य प्रमाणों के अनुसार इन्होंने बहेरम खाँ तथा मुहम्मद खाँ से संगीत की शिक्षा पायी थी | अतः कई घरानों का मिश्रण इनकी गायकी में था |[60]

परंतु पं वी रा आठवले जी के अनुसार दिल्ली घराने को पीछे छोड़कर पटियाला घराना लोकप्रियता में आगे बढा |[61]

बड़े गुलाम अली खाँ साहब इस घराने के प्रमुख कलाकार थे | इनके अलावा मुनव्वर अली खाँ, प्रसून बैनर्जी, मीरा चटर्जी, मालती गोलानी तथा पाकिस्तान वाले गुलाम अली, अजय चक्रवर्ती इस घराने के उल्लेखनीय कलाकार रहे है |

ख्यालों कि कलात्मक परंतु संक्षिप्त बंदिश, आलंकारिक वक्र तथा फिरत की तानें, अति द्रुत लय में संचार करनेवाली सपाट तान, गले की तथा तानों की अद्भुत तय्यारी, पंजाब अंग की ठुमरी गाने में निपुणता आदि इस घराने कि विशेताएं है |

1.8.7 सहसवान रामपुर घराना

इस घराने का उदभव ग्वालियर घराने से माना जाता है अर्थात ग्वालियर घराने के उप घराने के रूप मे इसका अस्तित्व है | हद्दू खाँ के दामाद इनायत हुसेन खाँ इसके प्रवर्तक माने जाते है |

[60] अशोक कुमार 'यमन'(2015). *संगीत रत्नावली.* चंडीगढ़/नई दिल्ली: अभिषेक पुब्लिकेशन्ज. पृष्ठ 500

[61] आठवले वि. रा.(2008). *नादचिंतन*(प्रथम संस्करण). मुंबई : संस्कार प्रकाशन . पृष्ठ 16

तथापि इस घराने से अत्यंत कुशल एवं विद्वान पाँच संगीतज्ञों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो निम्न लिखित है |

1. इनायत हुसेन खाँ 2. इमदाद खाँ 3. निसार हुसेन खाँ 4. मुश्ताक हुसेन खाँ तथा 5. हैदर खाँ | इनके अलावा सादिक अली, रशीद खाँ, गुलाम अकबर खाँ, जफ़र हुसेन खाँ, अश्फक हुसेन खाँ, आरिफ़ हुसेन खाँ आदि प्रमुख कलाकार है |

ग्वालियर घराने की सारी विशेषताओं के साथ तरानों के लिए यह घराना विशेष रूप से प्रसिद्ध है |

इस प्रकार से, प्रथम आध्याय में, मनुष्य सृष्टि को परमोच्च ध्येय प्राप्त करानेवाला 'सनातन धर्म', तदनुकूल 'संस्कृति' तथा उनके सापेक्ष 'कला' तथा 'संगीत' के विषय में शोधार्थी ने समीक्षा की है | मनुष्य की अंतिम लक्ष प्राप्ति के परिपेक्ष में, आत्मोंन्नति के मार्ग पर चलने के लिए 'अध्यात्म' और 'भक्ति', सनातन धर्म के दो अहम पहलू है; जो मनुष्य को पूर्णत्व की ओर ले जाते है तथा इसी पूर्णत्व की यात्रा में अग्रसर होने के लिए 'अध्यात्म' और 'भक्ति' में किया जानेवाला "संगीत" का मिश्रण शीघ्र एवं सुगम, लक्ष्य साध्य कराता है यह शास्त्र एवं इतिहास के माध्यम से ज्ञात होता है | अतः द्वितीय आध्याय में शोधार्थी ने, अध्यात्म एवं भक्ति के साथ जुड़े हुए संगीत के बारे में चर्चा करके, 'भक्ति आंदोलन' को प्रेरणा देनेवाली तत्कालीन समाजीक परिस्थितियों के संदर्भ में; 'भक्ति' के माध्यम से की गई धार्मिक एवं राजकीय क्रांति के विषय में परीक्षण करके अपने विचार प्रकट करनेका प्रयास किया है |